नेज पाक्षिक मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ५ वर्ष : १८ १ मार्च १९८२
दीवाना
होली अंक
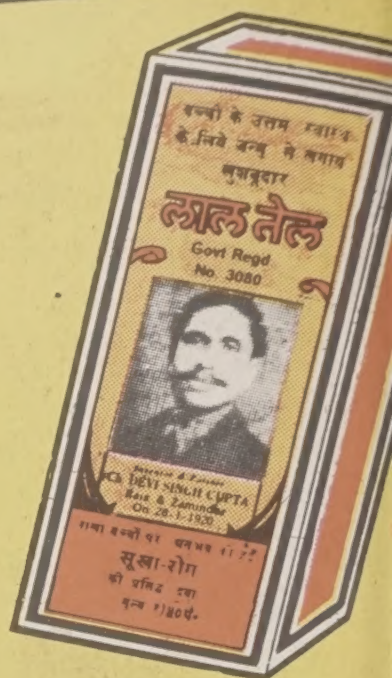
लल्लू

टिट्टी, यह देखो यह नयी पिचकारी मैं केवल कल तुमसे होली खेलने के लिये लाया हूं। इसे मेरे अंकल हांगकांग से मेरे लिये लाये थे। इम्पोर्टेड पिचकारी से होली खेलने का मज़ा ही कुछ और आयेगा।
ठीक है, मेरे घर आना मेरे डैडी को होली खेलने का बहुत शौक है।

लगता है यहां गोट फिट बैठ गयी। यहां अपनी दाल अच्छी तरह गल जायेगी। अब की होली शायद मेरे जीवन में रंगों की बहार लेकर आयेगी।

कल टिट्टी से होली खेलने उसके घर जाऊंगा। उसकी मम्मी व डैडी से इंट्रोडक्शन होगी। उसके घर आने-जाने का रास्ता खुल जायेगा। वह मुझे अपने घर का ही सदस्य समझने लगेंगे। मुझे कहेंगे लल्लू बेटे तुम रोज आया करो। तुम्हारे बिना हमारा दिल नहीं लगता। टिट्टी की शादी की बात आयेगी तो टिट्टी का बाप कहेगा लड़का घर में ही मौजूद है बाहर जाने की जरूरत क्या है?

आह! यही है टिट्टी का घर ई थर्टी सेवन, रिटायर्ड कर्नल रंजीतसिंह अहलुवालिया। लल्लू लाल, अपना दिल थाम और घर की घंटी बजा। तेरे सपनों की रानी सामने आयेगी।

कौन है तू?
पिचकारी लेकर यहां क्या करने आया है?

सर, मैं लल्लू लाल हूं।
सर, मैंने सुना है कि आप होली खेलने के शौकीन हैं। आज इस शुभ त्यौहार पर आपसे होली खेलने आयाहूं।

होली खेलने आया है? तो ठीक है। तू यहीं ठहर मैं अपनी पिचकारी लेकर आता हूं।
यस सर

ऐं!
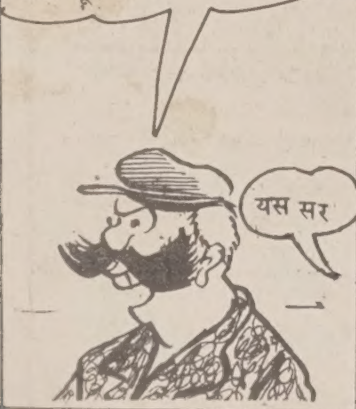
बेवकूफ तुझे किसी ने नहीं बताया कि मैं केवल खून की होली खेलता हूं।
ठांड
ब बन्दूक

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : समय आपके लिए लाभप्रद कहा जा सकता है, कामकाज की व्यस्तता में दिन अधिक व्यतीत होंगे, साहस शक्ति दृढ़ रहेगी, लाभ अच्छा होने लगेगा, भाग्य साथ देगा और किए कामों के सुपरिणाम प्राप्त होंगे.

वृष : सफलता के मार्ग में कुछ बाधाएं तो अवश्य आएंगी परन्तु समय अच्छा है, स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, नई योजना से भी लाभ की आशा रख सकते हैं, कोई विशेष सुचना मिलेगी, आय में वृद्धि.

मिथुन : आर्थिक संकट दूर होता महसूस होगा और व्यापारिक जीवन में भी नवीन योजनाओं में उन्नति, सफलता प्राप्त करने हेतु आपको काफी श्रम करना पड़ेगा, खर्चा बढ़ेगा,

कर्क : इन दिनों शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलेंगे, घरेलू एवं व्यापारिक जीवन में कठिनाई एवं परेशानी महसूस करेंगे, किसी सज्जन पुरुष से मुलाकात एवं सहयोग से कोई भारी संकट टल जाएगा.

सिंह : दिन संघर्षमय हैं, घरेलू एवं बाहरी उलझनों से मन परेशान रहेगा, परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त न हो सकेगी, भारी व्यय का सामना होगा, आय यथार्थ, मित्रजन एवं अच्छे लोगों का सहयोग मिलता रहेगा,

कन्या : इन दिनों आर्थिक तंगी तो आएगी परन्तु आप इस पर शीघ्र ही नियंत्रण पा लेंगे, सहयोगी अंगसंग रहेंगे, कोई मनोकामना पूरी होगी, कारोबार में नवीनता आएगी, प्रयासों में सफलता मिलेगी.

तुला : सफलता के मार्ग में कुछ रुकावटें तो आएंगी, परन्तु यह सब कठिनाइयां धीरे-धीरे दूर होती जाएंगी और आप कामों में सफलता प्राप्त कर लेंगे, कारोबार में उन्नति एवं आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा.
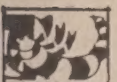
बृश्चिक : दिलचस्प होने के साथ-साथ यह सप्ताह संघर्षमय भी रहेगा, किसी विशेष कार्य पर व्यय होगा, संघर्ष तो काफी आएंगे लेकिन हालात आपके वश में रहेंगे एवं समय भी अच्छा व्यतीत होगा.
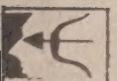
धनु : अनेक समस्याओं का समाधान हो जाएगा और कारोबार में भी सुधार की आशाएं बढ़ेंगी, सप्ताह पहले से अच्छा कहा जा सकता है, किए कामों के शुभफल प्राप्त होंगे.

मकर : शुभ अशुभ मिश्रितफलों से युक्त सप्ताह रहेगा, धन एवं समय का सदुपयोग न कर सकेंगे और व्यर्थ के कामों में भी खर्च करते रहेंगे, दोस्त भी उलझनें पैदा करेंगे परन्तु भविष्य में लाभ होगा.

कुम्भ : पिछले दिनों की तुलना में यह सप्ताह अच्छा कहा जा सकता है, कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे और कुछ विशेष कार्य पूर्ण होने से खुशी एवं उत्साह बढ़ेगा, लाभ अच्छा होगा.
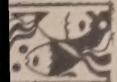
मीन : यह समय अच्छा रहेगा, परन्तु शुभफलों की प्राप्ति के लिए परिश्रम काफी करना पड़ेगा, इस मास के अन्त तक आप हालात में काफी सुधार हुआ महसूस करेंगे, कारोबार बढ़ेगा, यात्रा सफल.

दीवाना का नये साल का अंक मिला। साइज देखते ही मैं खुशी से झूम उठा, इसके लिये आपको बहुत सारा धन्यवाद। इस अंक में फैंटम, सिलबिल-पिलपिल, मोटू- पतलू और कहानी 'जब हम मिनिस्टर बनें' बहुत अच्छी लगी। लल्लू तो बहुत ही अच्छा लगा। कृपया मोटू-पतलू को रंगीन कर दें तो दीवाना पहले से कहीं अधिक सुन्दर हो जाएगा।

अगले अंक की प्रतीक्षा में—

राजेन्द्र सिंह बेदी
—सितारगंज (उ. प्र.)

दीवाना का नये वर्ष का पहला अंक बेहद ही प्यारे साईज में सजा हुआ मिला. जिसे पढ़कर इस अंक की तारीफ लिखने पर मजबूर हो गया. वाकई इस पहले ही खूबसूरत अंक की जितनी भी तारीफ की जाये मैं समझता हूं कम होगी. 'आपस की बातें' और खास तौर से 'मोटू पतलू' बहुत पसंद आये. वैसे, 'सिलबिल-पिलपिल' और कहानी, 'जब हम मिनिस्टर बने' का जवाब ही नहीं! कुल मिला कर यें अंक लाजवाब रहा. शुभकामनाएं हमेशा हमारी दीवाना के साथ रहेंगी।

'इमरान हैदर दुर्रानी, (वर्धा)
(महाराष्ट्र)

मुझे दीवाना बेहद प्यारा है, इतने कम पैसो में भरपूर मनोरंजन हो जाता है।५ या ६ वर्षों से मैं इसका निरन्तर पाठक रहा हूं, दीवाना वास्तव में मुझे दीवाना ही बनाये हुये है। अंक २१ आज मिला जिसमें ओइम क्रिकेटायः नमः. यह बहुत अच्छा लगा। सभी स्थाई स्तम्भ हंसी और शिक्षा प्रद बातों से भरे होते हैं नव वर्ष आप सभी को मुबारक हो।

आपसे सादर अनुरोध है कि (काली कलकत्ते वाली) या माता वैष्णों देवी का पोस्टर छापें।

सुभाष चन्द्र, पंजाव पुरा, बरेली

दीवाना का नया अंक नई सज धज एवं नया रंग रूप में पाकर मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि मत पूछिये, हर पेज एक नये से बढ़कर एक थे। स्तंभ 'क्यों और कैसे' में भूगर्भ स्थित खनिज पदार्थों की जानकारी पाकर मेरी जनरल नालिज कोर्स की एक और कड़ी में वृद्धि हो गई, बहरहाल दीवाना पाठकों को मनोरंजन हेतु नई उमंग के साथ हास्य रस के चरम शिखर पर पहुंचा गया। इस अंक को पढ़कर इस उम्मीद में हूं कि दीवाना हर अंक में इसी प्रकार मनोरंजन के नये-नये तरीकों के साथ आये। हम दीवाना की इस अनुकम्पा पर प्रफुल्लित हुए बिना नहीं रहेंगे।

शुभ कामनाओं के साथ एवं अगले अंक के इंतजार में।

बीरबल 'प्रकाश', मेहर
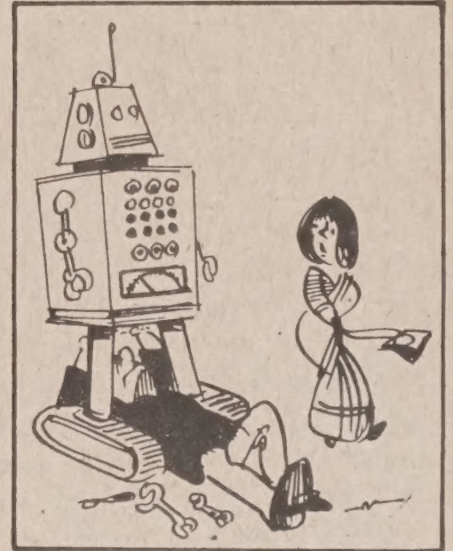
मुख पृष्ठ पर

होली के दिन मन में आया
रंग डालें आज किसी को हम
तब चिल्ली ने एक लड़की देखी
नहीं लगी वो किसी से कम।
दे बैठा दिल एक नजर में
और ले आया अपने घर
जी भर कर तब रंग बनाया
मारी पिचकारी भर-भर कर॥

अंक : ५ वर्ष : १८ १ मार्च १९८२

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : २७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक : १४ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

होली का भूत

कहानी

सांवला रंग। छोटा कद। बढ़ी हुई तोंद। गोल चेहरा। पक्के-अधपक्के घुंघराले बाल। लेकिन सिर का अगला हिस्सा सफाचट. सब कुछ मिला कर पूजा-पाठ करने वाले पंडित जैसे लगते थे। यदि लोगों को ठगने का तजुर्बा रखते तो ज्योतिषी बन कर आसानी से ठग सकते। मगर वैसा थे नहीं देबू चाचा। बड़े आत्मीय, मिलनसार तथा खुशमिजाज थे। भगवान ने अच्छा स्वभाव तो दिया देबू चाचा को। पर एक भी संतान नहीं दी थी। अतः कभी-कभार निःसंतान होने की बात को लेकर वे दुखी रहा करते। मगर पड़ौस के सभी बच्चे बड़े प्यार से 'चाचा-चाचा' पुकारते रहते। इसलिए देबू चाचा निःसंतान होने के दुःख को अपने दिल में खटकने नहीं देते.

देबू चाचा की पत्नी, अर्थात् हमारी चाची भी देबू चाचा के स्वभाव की थी। हमें वह बहुत मानती थी, और प्यार भी करती थी. जब देबू चाचा को तनखा मिलती तो उस दिन देबू चाचा ढेर सारे चॉकलेटस पड़ौस के बच्चों के लिए ले कर आते थे। चाची बच्चों को लाइन में खड़ा करवाती। फिर सब के हाथ में एक-दो चॉकलेट थमा देती।

देबू चाचा रेलवे गेट में चौकीदार थे। बस, एक ही गेट में चौकीदारी करते देबू चाचा बीस वर्ष बिता रहे थे। रेलवे के दूसरे चौकीदारों की तो पांच वर्ष के भीतर-भीतर दूसरे गेट के लिए तबदीली हो जाती है। पर बीस वर्षों तक देबू चाचा उसी गेट में ही चौकीदारी कर रहे थे। रेलवे के आफिसरों से देबू चाचा की अच्छी पटती थी। रेलवे के ऑफिसर कहा करते-'देबू शराब नहीं पीता। भांग नहीं खाता। जूआ नहीं खेलता। यहां तक कि पान-बीड़ी से भी काफी दूर रहता'। सचमुच देबू चाचा हर नशा से दूर थे, बहुत दूर।

होली और दिवाली इत्यादि पर्व-त्योहारों के दिन देबू चाचा छुट्टी लेकर चले आते। दिवाली में पड़ौसी बच्चों के साथ पटाखे चलाते, फूलझाड़ियां उड़ाते। बच्चों को लाइन में खड़ा करवाते और मिठाइयां बांटते। दिवाली बड़े मजे में कट जाती।

दिवाली की तरह होली भी। बाल्टी भर रंग लेकर बच्चों को दौड़ाते। बच्चे ठहाके मार कर दौड़ते। या रंग लेकर बच्चे ही दौड़ाते देबू चाचा को। होली का दिन भी बड़े मजे से कट जाता।

एक बार की बात है होली के दिन देबू चाचा छुट्टी लेकर सबेरे-सबेरे आ पहुंचे। देबू चाचा के आने की खबर कानों-कान पड़ौस में फैल गई। देबू चाचा के आने पर बच्चों में बेइंतहा खुशी हुई

तब देर किस बात की रहती। बड़े-छोटे नंगे अधनंगे बच्चे देबू चाचा के पास एक-एक कर आने लगे. रंग, अबीर और पिचकारी लेकर। बच्चों की टोली देख देबू चाचा घबराये नहीं। वरन् उन्हें भी बेइंतहा खुशी हुई। वे बच्चों की टोली में चटपट मिल जाते। पर नाश्ता कर के आए नहीं थे। अतः उन्हें बच्चों को आश्वासन देना पड़ा, "बच्चों, सिर्फ बीस-पचीस मिनिट ठहर जाओ। जरा मैं नाश्ता कर के आता हूं।"

बच्चों ने 'हां' में एक साथ सिर हिला दिए। देबू चाचा नाश्ता करने चल दिए। बच्चों की टोली कुछ मिनटों के लिए तितर-बितर हो गई।

देबू चाचा एक होटल में घुसे और चटपट चार मालपूए खाकर निकले। रास्ते में इससे-उससे बतियाते रहे। इसलिए करीबन घंटा भर लगा घर पहुंचने में।

घर पहुंचकर देबू चाचा घर के अंदर घुसे। इधर बच्चे उनका इन्तजार करते-करते झल्लाने लगे। तभी चाची बेतहाशा चिल्लाने-चीखने लगी, "बच्चों, बच्चों! अरे कोई है! हाय! तेरे चाचा को क्या हो गया ...ऽऽऽ!"

चाची जिस भंगिमे से चिल्लाने-चीखने लगी थी, उससे सब को बड़ा ताज्जुब हुआ। बच्चे जहां-कहीं भी थे, दौड़े चले आए। और देबू चाचा को घेर कर खड़े हो गए।

देबू चाचा का यकायक बदला हुआ रुख देख बच्चे भी बेतहाशा ताकते के ताकते रहे। देबू चाचा हाथ-पांव इस कदर चला रहे थे मानो किसी ड्रामा में पागल का रोल करने के लिए रिहर्सल कर रहे हों। आंखें इस कदर मटका रहे थे, जैसे फिल्म के पर्दे पर केश्टो मुखर्जी शराब पीकर करता है। होंठ ऐसे चाटने लगे थे जैसा रेगिस्तान के राहगीर चाटते हैं। और जो-सो इस मानिंद बकने लगे, जैसा नींद में लोग बकते हैं; या पागल आदमी बकता है!

इतनी देर में पड़ोसियों का अच्छा-खास हूजूम जमा हो गया देबू चाचा के घर में।

चाची ने देबू चाचा को चारपाई पर लिटा दिया था। देबू चाचा चारपाई से उठ कर मुस्करा कर बोलते, "बच्चों, हा, हा, हा ...ऽ! देखो-देखो? मेरी चारपाई उड़ना चाहती है! देखो, देखो अब उड़ी! उड़ी रे उड़ी! हा, हा, हा! नहीं, देखो, देखो, चलने लगी नहीं-नहीं मैं उड़ रहा हूं! नहीं-नहीं! यह ऊपर जा रही है और आसमान नीचे आ रहा है!"

बोलते-बोलते खामोश हो जाते एक बारगी। फिर रोनी सी सूरत बना कर बोलते, "बच्चों, मैं तो मर गया। अबनहीं बचूंगा। शरीर के अंदर हवा एकदम नहीं है।" इस कदर कहते-कहते हल्की सी सिसकी लेते। फिर यकायक चुप्पी साध लेते।

देबू चाचा की बरकरार हरकतें देख बच्चे तो भकुआये रहे। होली के दिन को भी वे भूल गए। पूरे हूजूम में मातम छा गया। चाची तो 'हाय तोबा' करने लगी जोरों से। चाची की हाय तोबा से हाय-हाय करतीं पड़ौसी औरतें एक-एक आंगन में इकट्ठी होने लगीं।

पड़ौस की एक बुढ़िया भी आहिस्ता-आहिस्ता लाठी के सहारे रेंगती हुई हूजूम में घुस आई। देबू चाचा की एक्टिंग देख कर बोली, "हें, हें, हें, इसे तो पुराना पीपल का भूत ने पकड़ लिया है।"

बुढ़िया की बात पर सभी को विश्वास करना लाजिमी होगया। दरअसल देबू चाचा ने जिस कदर का उत्पात मचा रखा था, ठीक वैसा ही पुराना पीपल पेड़ में रहने वाला भूत के चंगुल में फंसा आदमी उत्पात मचाता है। मसलन पहले भी ऐसा देखा गया था।

देबू चाचा का भूत कौन उतारेगा? इस सवाल पर सभी चुप्पी साधे हुए थे। पड़ौस में उस विधवा बुढ़िया के पति के सिवा दूसरा ओझा और था नहीं। उस बुढ़िया के पति के मरने के बाद पूरा मोहल्ला ओझा शून्य हो गया था।

पहले तो उस बुढ़िया का पति जाना-माना ओझा था। 'कौन सा भूत है, कहां रहता है? कैसे उतरेगा? आदि-आदि बातें मरीज का चेहरा देखकर या तो नब्ज टटोल कर बता देता था। नहीं मानने वाला भूत भी इधर नब्ज टटोलते, उधर फूर्र हो जाता था।

कुछ ऐसा ही तजुरबा उस बुढ़िया में भी था। पर वह सिर्फ इतना ही बता सकती थी कि किस में रहने वाले भूत ने पकड़ लिया है। भूत उतारने की विद्या उसने सीखी नहीं थी।

किसी ने बताया कि कुंवर टोला में बड़े-बड़े भूत उतारने वाला ओझा रहता है। उस के बताने के बमूजिब एक लड़के को साईकिल से कुंवर टोला भेजा गया। उस ओझा का नाम शंकर ओझा था

तकरीबन आधा घंटा के भीतर शंकर ओझा देबू चाचा के घर पहुंचा। देबू चाचा का बरकरार उत्पात देख शंकर ओझा ने पहले तो अनाकानी की। उसके बाद भूत उतारने की फीस सौ रुपये मांगी। पर पड़ोसियों के गिड़गिड़ने पर पचास रुपये पर राजी हो गया।

तकरीबन बीस मिनटों तक शंकर ओझा ने भूत उतारने का मंत्र-पाठ किया। उस के बाद देबू चाचा की पीठ में चार-पांच मुक्के इतनी जोर से जड़ दिए। "भाग, जा भाग? भाग जा अपने घर, वरना ....?" कहते-कहते और दो-तीन मुक्के कस दिए। देबू चाचा दर्द के मारे चीख पड़े।

"हां, जा, जा चीखते हुए भाग! मार खाने यहां आया था स्साले।" कह कर शंकर ओझा ने जबरन देबू चाचा को चारपाई पर लिटा कर चादर ढक दी।

"अब इन्हें कुछ न होगा। बस एकाध घंटे में चंगे हो जायेंगे।" कह कर शंकर ओझा ने वहां से फूटने की इजाजत मांगी।

एकाध घंटे क्या? दो घंटे गुजर गए। देबू चाचा में कोई तबदीली नजर नहीं आई। इसलिए सब निराश और गमगीन रहे। कोई-कोई तो शंकर ओझा को फालतू, चोर चोट्टा की खिताब देकर गालियां देने लगे।

कुछ लोगों ने आंशका जाहिर की कि बुढ़िया ने भूत पहचानने में भूल की। किसी-किसी ने कहा, 'देबू चाचा पागल हो गए।'

देबू चाचा के घर के आस-पास अच्छा-खासा हूजूम घिरा देख डाक्टर शर्मा कार रोक कर वहां आए।

"क्या हुआ भाई? इतनी जमघट क्यों? डाक्टर शर्मा ने एक बूढ़े से पूछा। उस बूढ़े आदमी ने इतमिनान से देबू चाचा के बारे में डॉ० शर्मा को बता दिया।

डॉ० शर्मा वाकफियत लेकर देबू चाचा के पास आए। कलाई उठाई। नब्ज दबाई। होंठ, जीभ और आंखें देखीं। शायद इतने में ही डॉ० शर्मा ने असली कारण जान लिया वे मुस्करा कर बोले, 'इन्होंने भांग खाई है?"

तभी होटल का बैरा दौड़ा हुआ वहां पहुंचा और डॉ० शर्मा को बता दिया, "डाक्टर सांब, गलती से हमने इन्हें भांग के मालपूए खिला दिए। होटल में आज भांग के मालपूए बने हैं। आज होली है ना? इसलिए."

इतना कह कर बैरा ने होटल की ओर से माफी मांगी। भांग का नशा उतारने का नुस्खा बता कर डॉ० शर्मा चल दिए.

देबू चाचा के ऊपर हमारी हंसी भी आ रही थी और दया भी। दरअसल शंकर ओझा ने भूत भगाने के लिए उन की पीठ पर मुक्के जो जड़े थे, उसका चिह्न भी उभर आया था।

चोबदार नत्थू तुम शाही डाक्टर को फौरन हमारे हजूर में हाजिर होने का हुक्म दो। हमारे पेट में कुछ गड़बड़ हो गयी है। रात भर से गुड़-बुड़ की आवाज आती रही है। पता नहीं क्या बात है?
महाराज, शाही डाक्टर खुद मेडिकल लीव पर है दूसरा डाक्टर बुला लाता हूं।
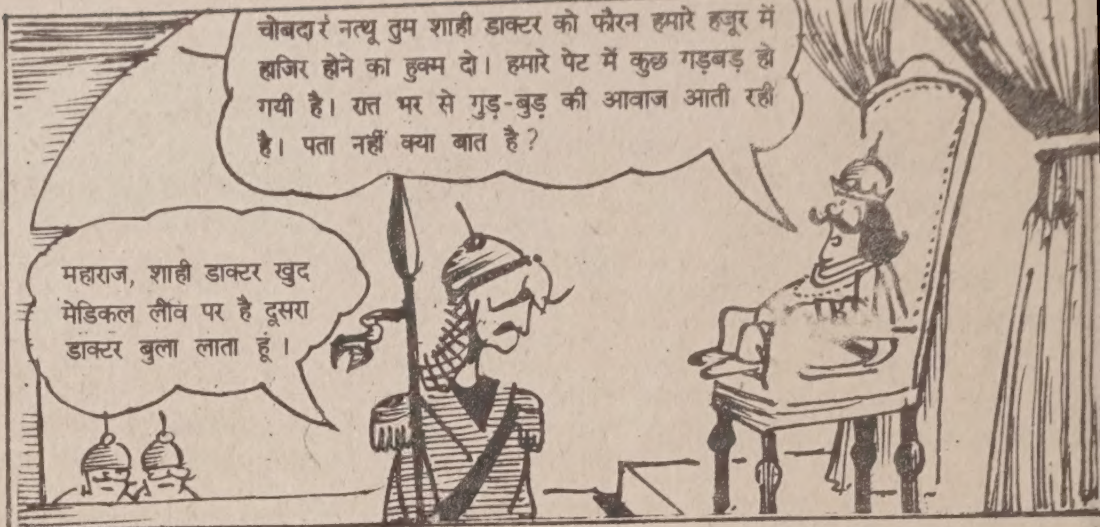
महाराज आपने रात को जो सरसों का साग और चार मक्की की रोटियां खाई थीं उसी के स्वागत में आपकी अंतड़ियां ३१ तोपों की सलामी दाग रही हैं। इसका एक ही इलाज है, आप किले से बाहर खुली हवा में सैर करने जाइये।

मसखरे, तुम हमारे साथ सैर को चलोगे?
जो आज्ञा महाराज

यह गधा महल के पास किले के भीतर क्या कर रहा है? किसने इसे अन्दर आने दिया, इसे तो किले के बाहर धोबी घाट पर होना चाहिये थां
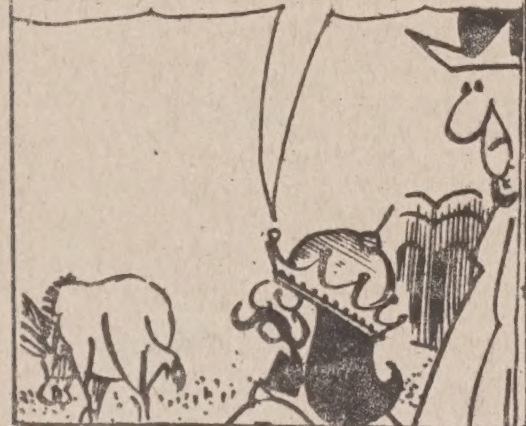
महाराज, इसने रात को सरसों का साग और मक्की की रोटी नहीं खाई होगी। इसीलिये इसे किले के बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ी।

खामोश! तुम कभी-कभी हद से बाहर हो जाते हो आइन्दा ऐसी गुस्ताखी हुयी तो तुम्हारा सिर कटवा दूंगा। किले में बड़ी बद इन्तजामी फैली हुयी है। कोई चीज जहां उसे होना चाहिये वहां नहीं है।

मैं चाहता हूं कि जिसकी ड्यूटी जहां हो वह वहीं मिले। फौरन हुक्म की तामील हो।
दुलत्ती!

समाचार पंजीयन (केन्द्रीय) नियम १९६६ के ८ व नियम (संशोधित) से सम्बन्धित प्रेस और पुस्तक अधिनियम की धारा १९-डी की उपधारा (बी) अन्तर्गत अपेक्षित दिल्ली के दीवाना तेज पाक्षिक नामक पत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा।

(१) प्रकाशन स्थान : दिल्ली
(२) प्रकाशन की आवर्तिता : पाक्षिक
(३) मुद्रक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६
(४) प्रकाशक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६
(५) सम्पादक का नाम : विश्वबन्धु गुप्ता
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
(६) उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी और भागीदार या कुल पूंजी के एक प्रतिशत के अधिक के शेयर होल्डर हैं। दि डेली तेज प्राइवेट लि०, नया बाजार, दिल्ली-६।

१. तेज एन्डोमेण्ट ट्रस्ट, बर्न वस्टन रोड, दिल्ली-६
२. श्रीमती रक्षा सरन, नटकॉफ हाउस, दिल्ली।
३. मेजर जनरल हिज हाइनेस नवाब सर सैय्यद रजा अली खां बहादुर हर और हाइनेस रियासत जमानी बेगम खास बाग रामपुर।
४. राय बहादुर बनारसी दास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लि०, सदर बाजार, अम्बाला छावनी।
५. मे० बी० एस० हरीचन्द कपूर एण्ड सन्स, कोहिनूर सिनेमा, राटेड रोड, दादरा बम्बई।
६. मे० बिहारी लाल बैनीप्रसाद महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली।
७. लाला कृष्ण दत्त, १३ बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
८. मे० अपर इण्डिया शुगर मिल्स लि० खतौली।
९. श्री विश्व बन्धु गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१०. श्री विजय कुमार १७, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
११. श्री धर्मपाल गुप्ता, कॉटेज नं० ९, ओबराय एपार्टमेन्ट अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१२. श्री रमेश गुप्ता, कॉटेज नं० ९, ओबराय एपार्टमेन्ट, अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१३. कुमारी मंजुल गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१४. श्री सतीश गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१५. श्री प्रेम बन्धु गुप्ता, डी-८५४, न्यू फ्रेन्डस कालोनी, नई दिल्ली-११००६५।
१६. श्रीमती सोनादेवी गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली

मैं पन्नालाल जैन घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

पन्नालाल जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

१-३-८२

मोटू पतलू

एक टाईम मशीन द्वारा मोटू-पतलू, डाक्टर झटका, घसीटा राम, चेला राम, जूडो मास्टर और अकलमन्द उल्लू आज से ३१०००० आगे के युग में पहुंच गये हैं. उस समय वहां सारी धरती पर मंगल ग्रह से आये लाल रंग के तांबे जैसे विचित्र प्राणियों का अधिकार है, उन्होंने धरती के सारे वैज्ञानिक प्रस्थानों और अंतरिक्ष केन्द्रों को नष्ट कर दिया है. भारी कारखानों को मलियामेट कर के राख का ढेर बना दिया है और उन के बड़े-बड़े जजुबीकार वैज्ञानिकों को मार डाला है और पूरी धरती एक बहुत बड़ी जेल बन गई है. पतलू और चेला राम को भी पकड़ कर मंगल ग्रह वालों ने बंदी बना लिया है और घसीटा राम अपनी चालाकी से उन की फौज में भरती हो गया है.

पिछले अंक तक की कहानी में धरती वालों का एक अंतरिक्ष केन्द्र मंगल ग्रह से आये प्राणियों की नज़र से बच गया था और एक अंतरिक्ष यान वहां से उड़ान के लिये तैयार था. चेला राम और पतलू के पकड़े जाने के बाद मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर उस अंतरिक्ष यान में आ छुपे थे और अंतरिक्ष यान आकाश की ओर उड़ चला था. यान के चालक वैज्ञानिकों को उन्होंने टाईम मशीन द्वारा यहां तक आने और मुसीबत में फंसने की बात बताई और वैज्ञानिकों का विश्वास प्राप्त कर लिया. वैज्ञानिकों ने उन्हें बताया कि वे मंगल ग्रह पर जा कर उन ही के घर में उन से लड़ने जा रहे हैं. मंगल ग्रह वालों के पास "एक्सनोबियम" नाम का एक शक्तिशाली विनाशकारी पदार्थ है. उसके सामने हमारे एटम और हाईड्रोजन दीवाली के पटाखों की तरह बच्चों का तमाशा है. उनके "एक्सनोबियम" के सामने हमारी 'लीज़र बीम' चांद की ठंडी चाँदनी से अधिक और कुछ भी नहीं. हम मंगल ग्रह पर जा कर उन से लड़ेंगे और यह पता लगायेंगे कि उन के पास एक्सनोबियम का कितना भंडार है.

मोटू और डाक्टर झटका की समझ में नहीं आ रहा था कि जो अपने घर में मंगल ग्रह वालों से अपनी रक्षा नहीं कर सके और जिन के हाथ में लड़ने के लिये गुल्ली डंडा तक नहीं वे किस बूते पर मंगल ग्रह वालों का मुकाबला करेंगे. लम्बा सफर तय करके अंत में वे मंगल ग्रह पर जा पहुंचे थे. सारे मंगल ग्रह को उस समय पानी में डूबा देख कर उन्होंने अपना यान पानी के अंदर उतारा था. तभी मंगल ग्रह की पनडुब्बियों ने उन पर हमला करके उनका अंतरिक्ष यान नष्ट कर दिया था और वे गोताखोरों के वस्त्र पहन कर पानी में छलांग लगा गये थे.

अब कोई यंत्र उन्हें अपनी ओर खींच रहा है मंगल ग्रह पर हमारे कलाकारों के साथ क्या बीत रही है, इस का आखों देखा हाल दिखाने के लिये, चलिये हम आप को लिये चलते हैं, आज से ३१०००० आगे के युग में.
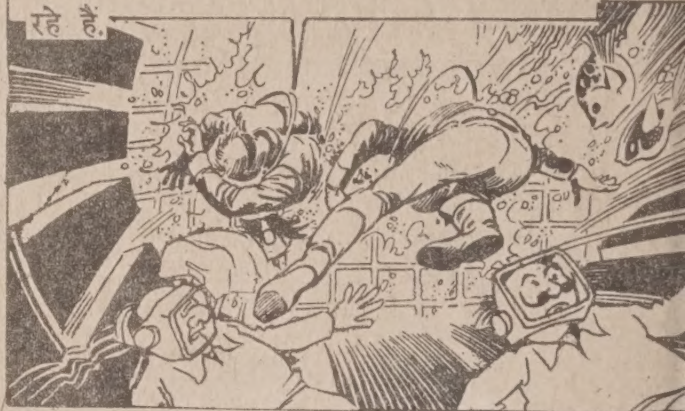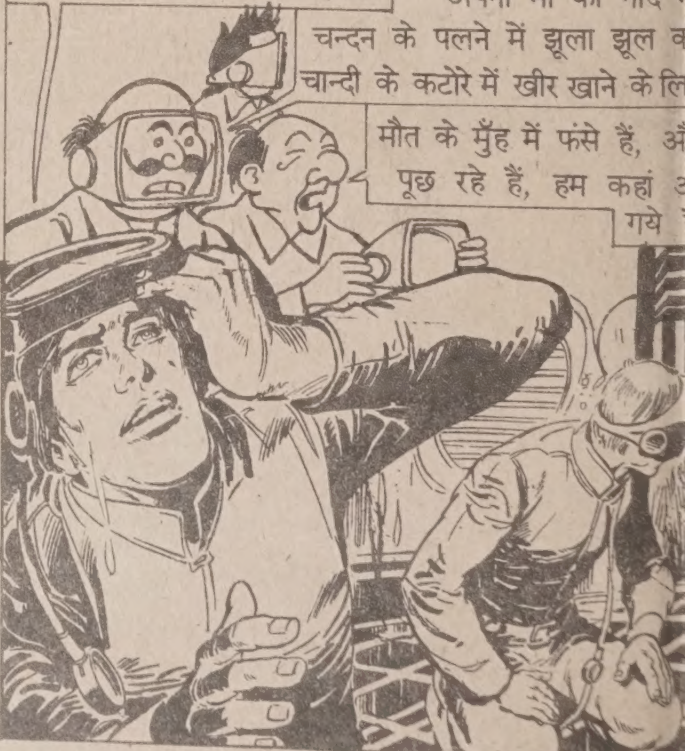
तभी पनडुब्बी की मशीन का एक और दरवाज़ा खुला . . .
...MINUTE!

और वे उस के एक और अन्दरूनी भाग में पहुंच गये.
हैलो सर. धरती से आये कुछ मैंढक पकड़े गये हैं.
इन्हें मौत के चैम्बर में पेश करो.
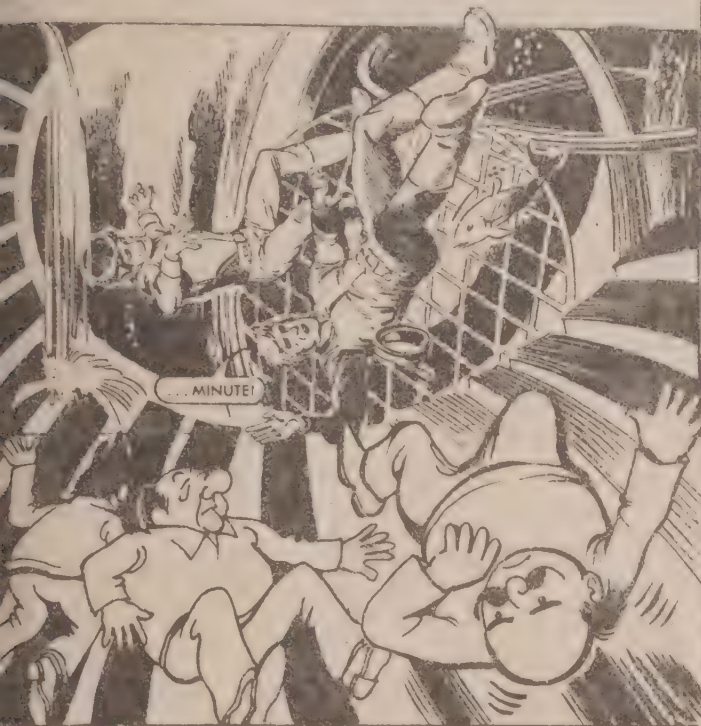
मौत के चैम्बर में वे बिजली के शक्तिशाली करंट के घेरे में बन्दी बनाये गये.
तो तुम हो वह मनहूस, जो कुत्ते की मौत मरने के लिये यहां आये हो.

कह दो बहादुरी की मौत मरने आये हैं. बाकी सब कुछ तो याद रहा, बस शहीदों का भगवा चोला पहनना भूल गये.
अपने को हम से तीन लाख साल आगे का प्रगतिशील वैज्ञानिक कहते हो और अक्ल हमारे ज़माने के गंगू तेली और नत्थू पनवाड़ी जितनी भी नहीं.
तुम्हारी तो वह हालत है कि बन्दर को उस्तरा मिला तो उस ने अपनी नाक काट डाली.

इन्हें मारने से पहले पूछ-ताछ के लिये गुप्तचरों के हवाले कर दो. हो सकता है धरती पर इन का कोई और खुफिया अड्डा भी हो.
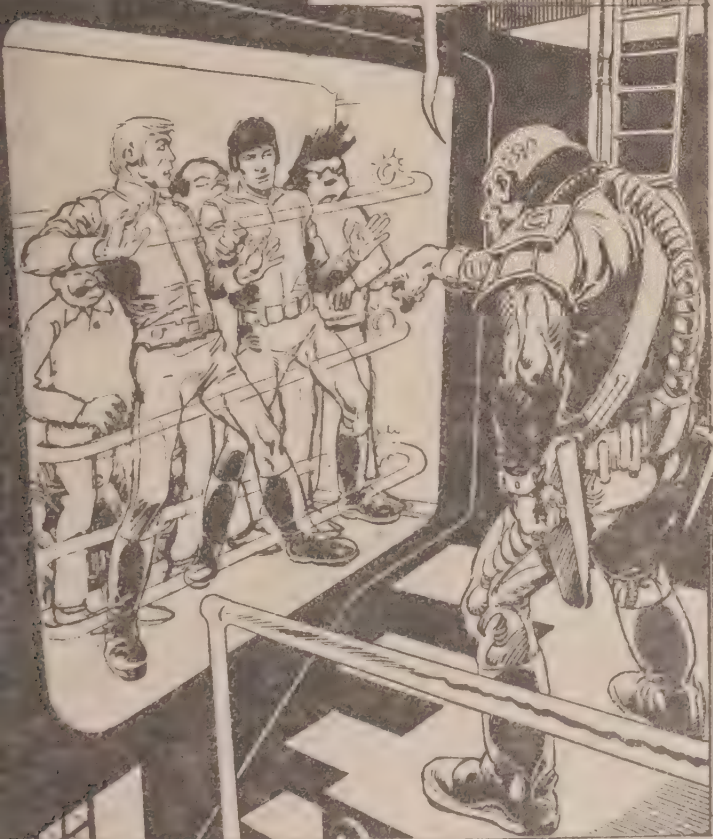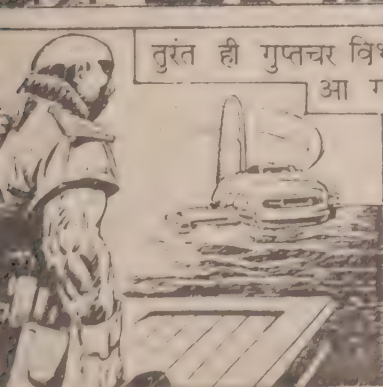
तुरंत ही गुप्तचर विभाग का फ्लाईंग स्क्वैड आ गया.
इन्हें ले जाओ और इन की खाल में नीबू के अचार का मसाला भर कर इन की हकीकत उगलवाओ.

उन्हें ले कर तुरंत ही फ्लाईंग स्कवैड अपने केन्द्र की ओर चल दिया.

अब क्या करें इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिये
जया भादुड़ी से फ़ोन पर पूछ लो वह रेखा से छुटकारा पा
लिये क्या कर रह

हमें जान बचाने की इतनी फ़िक्र नहीं. हमारा एक वीर साथी धरती पर अपना अंतरिक्ष केन्द्र बारूद से उड़ा कर पहले ही अपनी जान दे चुका है और सच पूछो तो हम निकले ही अपनी जान देने के लिये हैं.
तो धरती पर कोई कुंआ नहीं मिला डूब मरने के लिये.
पर जान देने से पहले हमें मंगल ग्रह वालों के ''एक्सनोबियम'' का पता लगाना है.
पर इस चक्कर में हमारा ''गोबियम'' और ''चुकन्दरम'' का अचार डलवाने पर क्यों तुले हो ?
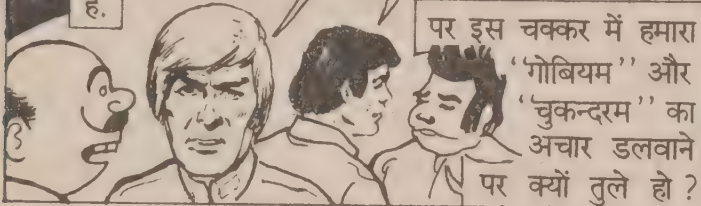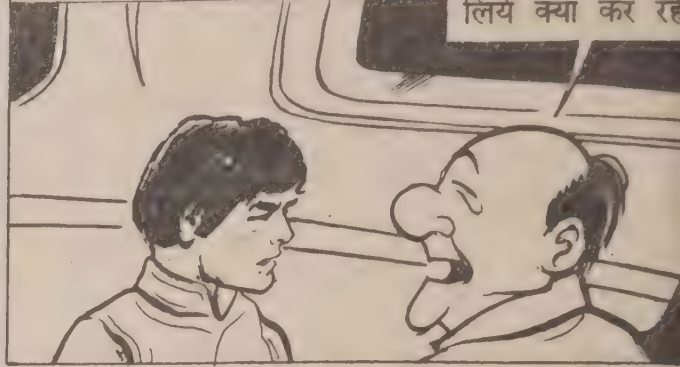
मैं शीशे का यह दरवाज़ा तोड़ रहा हूं.
पानी अन्दर आयेगा और हम सब डूब जाएंगे.
नहीं. हम ऊपर के केबिन का रास्ता ढूंढ़ लेंगे.

दरवाज़ा टूटते ही नीचे के केबिन में पानी भर गया.
पानी के दबाव से जहाज का संतुलन बिगड़ गया है. वे ज़रूर यह देखने के लिये दौड़ कर नीचे आयेंगे कि माजरा क्या है.

संतुलन क्यों बिगड़ रहा है. ? चलो, नीचे चल कर देखो ?

चौकस रहो. यह ख़तरनाक दुश्मन हैं.

जैसे ही बेसमैन्ट का दरवाज़ा खुला.
बाहरी केबिन के दूसरे दरवाज़े की ओर लपको.

वे बाहरी केबिन के पानी में डूब रहे हैं. इस अन्दरूनी केबिन का वाटरप्रूफ़ दरवाजा जल्दी बन्द करो.

अब वे बेसमैन्ट में कैद हैं और वहां भरे पानी में डुबकियां लगा रहे हैं.

मैंने बेसमैन्ट का बाहरी दरवाज़ा खोल कर उन्हें समुद्र में फैंक दिया है.

इन का पूरा फ़्लाईंग स्कवैड समुद्र में डूब कर मर गया. अब इस पनडुब्बी पर हमारा अधिकार है.
इस बार तो मान गये तुम्हें.
आख़िरी बार भी मान जाओगे. मरने से पहले हम एक्सनोबियम का पता लगा कर छोड़ेंगे.
कोई हमारा पता लगा सके, क्या तुम हमें इस काबिल छोड़ोगे ?
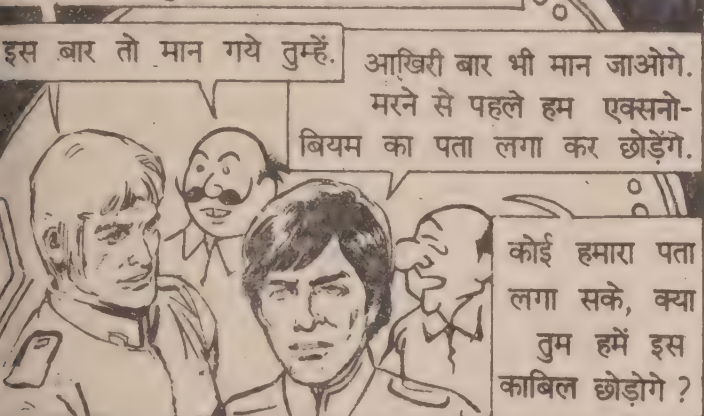
पनडुब्बी अपने कम्पयूटर की निर्धारित कार्यप्रणाली के अनुरूप खुद-बा खुद अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रही है.
हां, इसकी दिशा बदलना हमारे लिये हानिकारक सिद्ध होगा.

अब हमें पहनने के लिये सूखे कपड़े चाहियें.
वे पड़े हैं, उस अलमारी में.

ट्रांस्मीटर के सिगनल से पता चल रहा है, धरती पर अधिकार जमाये मंगल ग्रह वाले. पांच आदमियों का एक डैलिगेशन यहां भेज रहे हैं.

उसी समय धरती पर.
नहीं. मैं मंगल ग्रह पर जाना नहीं चाहता. मुझे यहीं रहने दो
हमारे आदेश के सामने ज़ुबान चलाता है. तेरी यह मजाल.
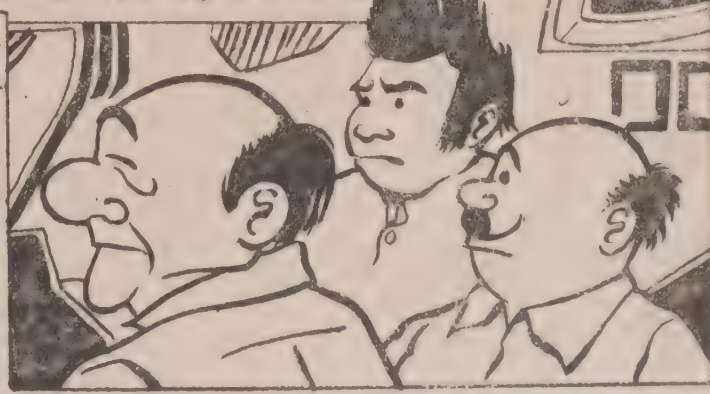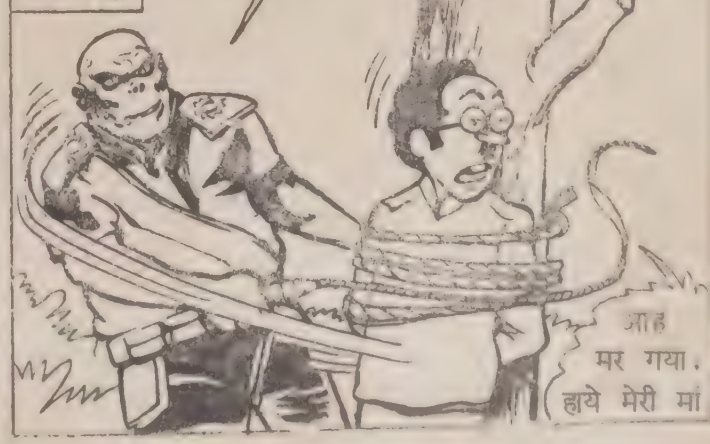
तेरा तो बाप भी जायेगा मंगल ग्रह पर.
आह मर गया. हाये मेरी मां

अपने वफ़ादार सिपाही के साथ यह सलूक.
ज़ुबान जो चला रहा है यह उल्लू
आह! मर गया, रहम! रहम!!
बोलो, जाओगे हंसी खुशी
हंसी ख़ुशी जाऊंगा माई बाप. देखो मैं कितना खुश हूं. कितना हंस रहा हूं. कैसे फूल झड़ रहे हैं मेरे मुँह से.

अब अक्ल आई इस उल्लू को. इन का फ़ौजी अफ़सर क्र कैसे अकड़ रहा था. यह नहीं पता था कि इनके सा ज़रा ज़ुबान चलाई तो यह रूई की तरह धुन देंगे.
मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर पता नहीं इस समय कहां हैं?
लगता है इन के हाथों मारे गये हैं. जिन्दा होते तो हमारी सहायता को ज़रूर आते.
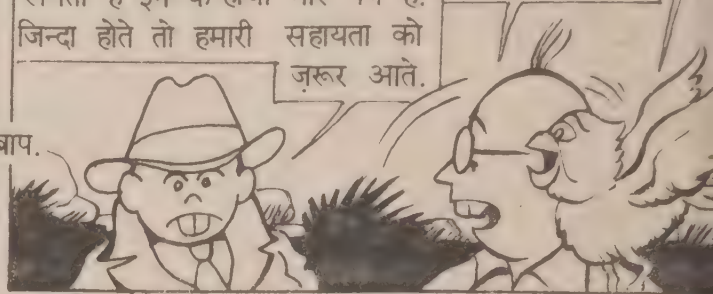
इन्होंने हमें एक बार मंगल ग्रह पर भेज दिया तो वापस आने का कोई चांस नहीं.
हैलो कैप्टेन शिंटू!

मैं कैप्टेन शिंटू बोल रहा हूं मंगल ग्रह कैम्युनिकेशन सैंटर से
मैं कमांडर चौंचू बोल रहा हूं. धरती पर बसी अपनी कालोनी से. यहां एक्सनोबियम का स्टाक समाप्त हो रहा है धरती वाले इतने बदमाश हैं कि विनाशकारी 'एक्सनोबियम'' के बगैर हम इन्हें काबू में नहीं रख सकते. यहां किसी भी समय विद्रोह का ख़तरा है. 'एक्सनोबियम'' का फ्रैश स्टाक जल्दी भेजो.
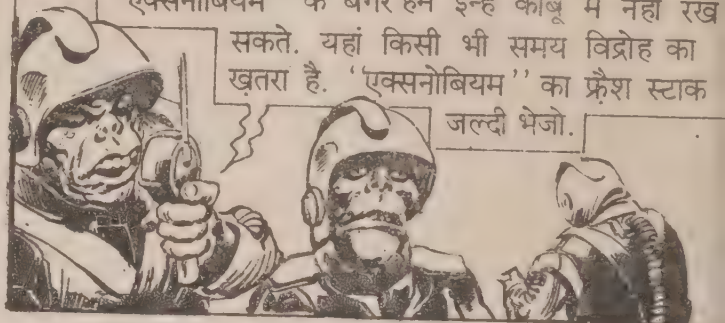
एक्सनोबियम की उन्नत खेप तैयार है. यह नया तजुर्बा धरती पर रहने वालों के लिये कितना हानिकारक सिद्ध होगा, इस का परीक्षण करना बाकी है.
हम धरती के पांच आदमी भेज रहे हैं. इन पर प्रयोग करके देखो, यह उन्नत एक्सनोबियम से कितनी जल्दी मरते हैं.

एक मूछों वाला आदमी ख़ास तौर पर भेजा जा रहा है. यह बहुत चालाक और बदमाश है. इसकी जान कितनी जल्दी जाती है, इसकी रिपोर्ट ख़ास तौर पर भेजना.
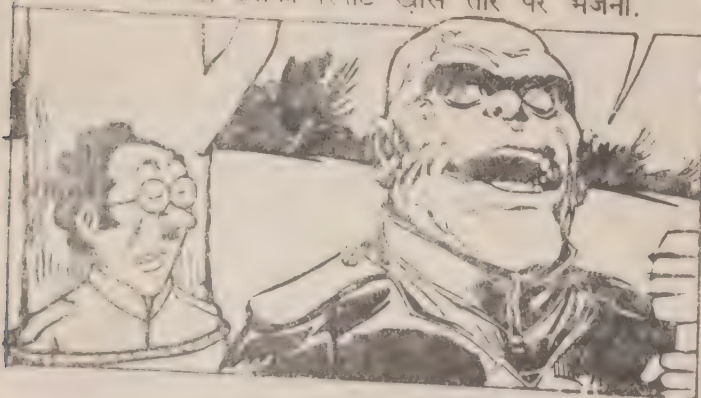
इस वायर लैस के सिगनल मोटू और डाक्टर झटका की फ़्लाईंग स्कवैड पनडूबी में भी पहुंच रहे थे.
इस मूछों वाले का नाम घसीटू है. हमारे माईंडडिटैक्टर ने बताया है, यह दोस्त बन कर धोखा देने वाला है. सब से पहले इसी को मारने का तजुर्बा करना. बाकी सब सीधे साधे हैं.
लगता है घसीटा राम उन के हाथ आकर भी उन के साथ कोई चाल चल गया.
मंगल ग्रह पर मौत के परीक्षण के लिये भेजे जाने वाले आदमियों में ज़रूर पतलू और चेला राम भी होंगे.
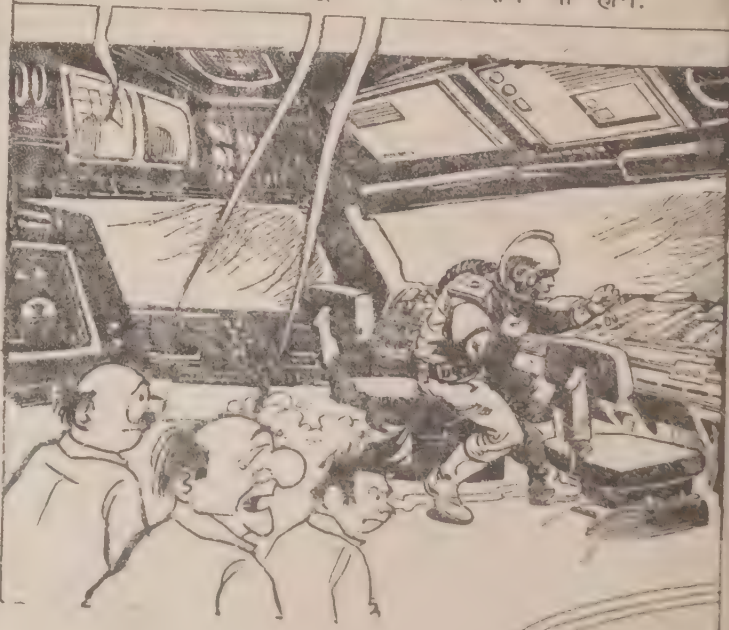
हम उनके हैडक्वार्टर पर पहुंचने वाले हैं. होशयारी से काम लेना.
थोड़ी ही देर बाद उनके हैडक्वार्टर पर पहुंच कर वे पनडुब्बी से बाहर निकल आये.
क्या तुम वे पांच आदमी हो जो उत्तम एक्सनोबियम के परीक्षण के लिये धरती से भेजे गये हो?
जी हां.
और तुम हो वह घसीटू राम, जिस के लिये कहा है, बहुत बदमाश आदमी है, भयंकर एक्सनोबियम का एक ...टका . . .
कथाकली का लटका दिखा देगा.
कथाकली का लटका क्या होता है?
यह हमारे एक डांस का नाम है.
डांस क्या होता है? क्या तुम्हारा कोई विस्फोटक पदार्थ है?
भयंकर विस्फोटक है हमारा कथाकली. वैजयंती माला या हेमामालनी का एक ठुमका तुम्हारे एक्सनोबियम के बड़े से बड़े भंडार को फक से उड़ा सकता है.
वैजयंती माला, हेमामालनी क्या तुम्हारी विनाशकारी तोपे हैं. क्या इस स्पेस शिप में भरे एक्सनोबियम राकेटों...
... से भी अधिक हानिकारक हैं जो हम अभी धरती पर भेजने वाले हैं..
.. इस यान में?
क्या यह स्पेशशिप उड़ान के लिये तैयार है?
बिल्कुल तैयार है. बस तुम पर यह परीक्षण करने की देर है कि इस की खतरनाक किरणें तुम धरती वालों को समाप्त करने में कितना कम से कम समय लेती हैं.
तुम्हारे पास एक्सनोबियम का कितना भंडार है?
बहुत बड़ा भंडार है. पहले तुम बताओ तुम्हारे पास कथा की कली या कली की कथा का कितना स्टाक है?
हमारे पास दो आर्टिस्टों का स्टाक है.
बताया ना, वैजयंती माला और हेमा मालनी दो आर्टिस्ट हैं.
मतलब है विस्फोटक कथाकली की दो तोपें हैं.
अच्छा बताओ, तुम्हारा यह एक्सनोबियम कहां से आता है?
पहले तुम बताओ, तुम्हारा वैजयंती हेमा विनाशकारी विस्फोटक कहां से आता है?
फिल्म कम्पनियों से आता है
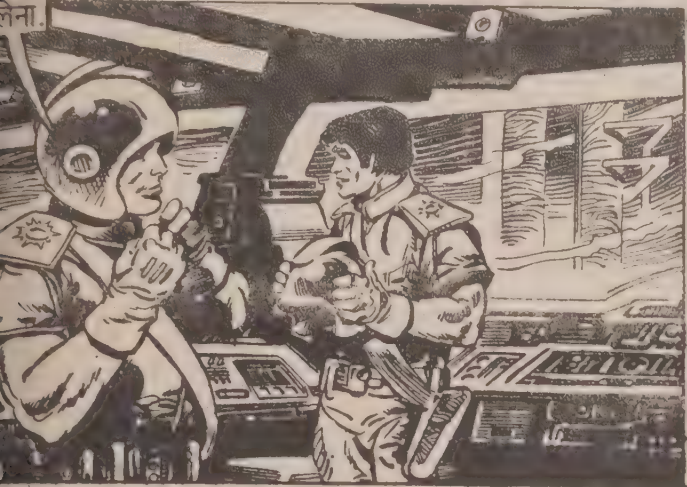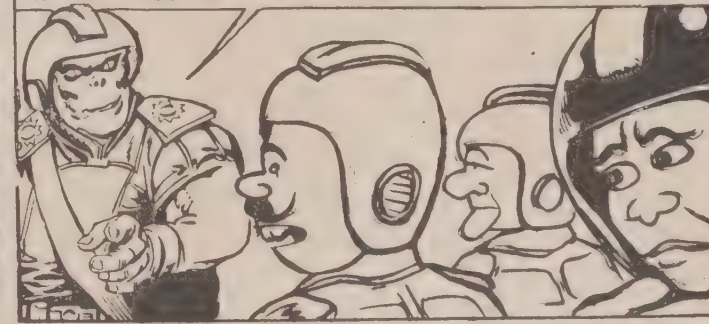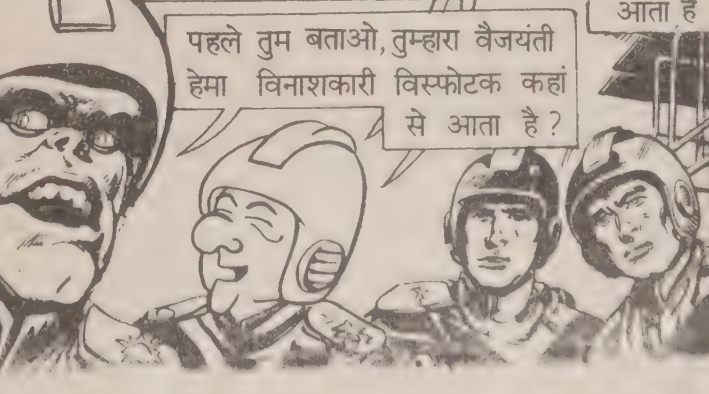
"परन्तु कौन ऐसा ऊटपटांगें संदेश घड़ी पर चिपकायेगा, जिसका कुछ मतलब समझ न आता है, महेन्द्र ने पूछा, "एक रहस्य, रहस्य नहीं रहेगा, यदि वह रहस्यमय न हो तो" राजू ने उत्तर दिया।

"इसे मैं मान लेता हूं," अब हमारा रहस्य और भी रहस्यमय हो गया और फिर से हम शुरू के स्थान पर आ गये, हम अब भी घड़ी के आने के स्थान का पता नहीं लगा पायें हैं—और इस विषय में तुम क्या करोगे राजू !

"मैं घड़ी के नीचे से सूखी गोंद खुरच रहा हूँ, उसके नीचे भी कुछ है, यह कुछ खुदा हुआ है, वह बहुत ही बारीक लिखा है और अक्षरों में गोंद भर गई है।" चलो हैडक्वाटर में चलकर इसे आवर्धक लेन्स से देखते हैं।

उसने प्रिंटिंग प्रेस के पीछे जाकर वहां लगी एक टीन वहां रक्खी चादर को हटाया और उसके पीछे नालीदार पाइप के भीतर का रास्ता खुल गया। एक के पीछे एक तीनों मित्र उस पाइप के रास्ते से खिसक कर आगे जाने लगे तीस फुट लम्बे पाइप में पुराने गलीचों के टुकड़ें बिछे हुए ताकि, घुटनों के बल भीतर जाने से घूटने न छिलें, यह दो नम्बर की टनल थी। इस टनल का कुछ भाग जमीन में धंसा हुआ था और इसके रास्ते से कबाड़ी घर में लड़कों के हैडक्वाटर ट्रेलर जो कि पुराने सामान से छिपाया हुआ था, के नीचे पहुंचा जाता था।

राजू ने ट्रेलर के नीचे पहुंच कर एक ढक्कननुमा दरवाजा खोला और सब छोटे से दफ्तर हैडक्वाटर में पहुँच गये। हैडक्वाटर में एक डेस्क, एक छोटी फाईलिंग केबिनेट टाइप-राइटर, टेपरिकार्डर और टेलीफोन फिट किए हुए थे। राजु ने छत की एक बिजली को जलाया और डेस्क दराज से एक बड़ा आवर्धन लेन्स निकाला, और घड़ी का निरीक्षण किया, फिर श्याम को थमा दिया।

श्याम ने बहुत गौर से लेन्स में से देखा तो घड़ी के नीचे बहुत छोटे अक्षरों में ऐ० हैगल लिखा दिखाई दिया।

'इसका क्या मतलब है?' उसने पूछा।

"मैं सोचकर एक मिनट में बताता हूँ, महेन्द्र सें टेलीफोन की किताब लेकर विशेष विज्ञापनों वाला भाग निकाला और सफे पलटने लगा। फिर उसने खुशी जाहिर की।

'देखो' वह बोला।

'घड़ी साजों के भाग में एक विज्ञापन था' ऐ०हंगल—घड़ीसाज—अनोखे काम हमारी विशेषता—इसके नीचे चांदनी चौक का एक पता और टेलीफोन नम्बर दिया हुआ था।

घड़ीसाज किसी भी घड़ी की मरम्मत करते समय अपना एक कोड उस पर खोद देते हैं इससे घड़ी दुबारा मरम्मत इत्यादि के लिए आने पर पहचानी जा सकती है, या फिर वे अपना नाम अपने बढ़िया कार्य करने की वजह से खोद देते हैं। मेरे ख्याल से अब हमें पता चल गया है किसने इस घड़ी को चीखने वाली बनाया था। यह हमारी जासूसी का पहला कदम हुआ। दूसरा कदम होगा मि० हंगल से मालूम करना, किसने उनसे घड़ी में चीख भरने को कहा था" राजू ने कहा।

खोज की राह पर

ए. फन्ट्श घड़ीसाज की दुकान दिल्ली के मशहूर चांदनी चौक की गलियों में एक छोटी सी दुकान थी.

"बरखासिंह तुम कार यहां खड़ी कर लो", राजू ने कहा।इस बड़ी कार का प्रयोग राजू ने किराये पर गाड़ी देने वाली एक ऐजेन्सी की प्रतियोगिता जीत कर प्राप्त किया. बाद में अपने एक मित्र की एक मूल्यवान वस्तु ढूंढ़ने में सहायता कर के इस बड़ी कार का प्रयोग फिर से उस ने दिला दियाथा.

'बहुत खूब राजू साहब', और ड्राईवर ने कार खड़ी कर ली. तीनों लड़के तुरन्त उतर गये. कुछ भीतर जा कर लड़के घड़ीसाज की छोटी सी धूल भरी सी दुकान के निकट खड़े उसके बोर्ड को देख रहे थे. इस पर सुनहरी पेन्ट से ए. फन्ट्रश घड़ी साज लिखा हुआ था. दुकान का शोकेस छोटी बड़ी धड़ियों से भरी पड़ी था. इनमें प्राचीन सादी, कामकारी वाली तथा कुछ फूलों और चिड़ियों से सुसज्जित दिखाई दे रही थीं. इनके देखते-देखते ही एक घड़ी से बिगुल बनाने वाला खिलौने का सिपाही बाहर निकला और अपने बिगुल को कई बार बजा कर घंटे का संकेत दिया.

"यह खूब सुन्दर है. मुझे तो घड़ी की चीख के बजाये यह बिगुल अधिक पसन्द आया", महिन्दर बोला— "चलो अन्दर चल कर देखते हैं कि मि० फन्ट्श हमें कुछ बता सकते हैं या नहीं", राजू बोला.

अन्दर घुसने पर बहुत सी शहद की मक्खियों के एक साथ भिनभिनाने जैसा तेज स्वर इनके कानों में पड़ा, पर तुरन्त ही इन्हें समझ आ गया कि स्वर इतनी सारी घड़ियों के एक साथ चलने से उत्पन्न हो रहा है.

एक छोटा सा व्यक्ति जिसने चमड़े का ऐप्रन पहना हुआ था घड़ियों के बीच से निकल कर इनकी ओर बढ़ा.इसकी सफेद मूंछें झाड़ी जैसी थीं और आंखें काली और चमकदार थीं.

"क्या आप अपनी घड़ी में कोई विशेष काम करवाना चाहते हैं या केवल मामूली खराबी ठीक करवाने आये हैं. "नहीं श्रीमान् हम आप से इस घड़ी के विषय में कुछ बात करना चाहते हैं."राजू ने उत्तर दिया, और अपने हाथ में पकड़े जिप वाले बैग की जिप खोल कर चीख मारने वाली घड़ी बाहर निकाली.

मि० फन्टूश ने कुछ देर घड़ी का निरीक्षण किया. ''बहुत पुरानी अलार्म घड़ी है, इसकी कीमत भी कुछ खास नहीं है,मेरे विचार से इसे ठीक कराना बेकार है.'' ''इसे ठीक कराने की आवश्यकता नहीं है श्रीमान् यदि आपको कष्ट न हो तो जरा इसका प्लग लगाइये,'' राजू बोला.

छोटे व्यक्ति ने अनमने से घड़ी का प्लग लगा दिया. ''अब मेहरबानी से अलार्म लगा दीजिये,'' राजू ने अनुरोध किया.''

मि० फन्टूश के अलार्म चलाते ही दुकान एक तीखी डरावनी चीख से भर गई, मि० फन्टूश ने तुरन्त अलार्म के बटन को घुमा दिया और चीख एक फुसफुसाहट में बदल गई.मि० फन्टूश ने घड़ी उठा कर उसे फिर से पीछे से देखा और मुस्कराये.

''अब मुझे यह घड़ी याद आ गई,यह एक चतुराई का कार्य था हालांकि मैंने इससे भी पेचीदा काम किये हुए हैं.''

''इसका मतलब हुआ घड़ी को चीखने वाला आपने ही बनाया था ? महिन्दर ने प्रश्न किया.

''हां मैंने ही इसे बनाया था एक कमाल की तबदीली है.क्यों क्या ख्याल है तुम्हारा।परन्तु मुझे खेद है मैं तुम्हें इस काम को कर वाने वाले का नाम नहीं बता सकता.

मेरा सब काम गुप्त होता है.

''हां श्रीमान, परन्तु यह घड़ी पुराने सामान के साथ हमें मिली है।अवश्य ही यह भूल से सामान में आ रखी गई होगी. घड़ी बनवाने के लिये जाहिर है इसके मालिक ने आपको काफी पैसा दिया होगा. हम यह उसे वापिस पहुंचाना चाहते हैं.

''कुछ सोचते हुए मि० फन्टूश ने सिर हिलाया. ''और इसके लिये हमें कुछ इनाम पाने की आशा भी है.'' श्याम ने कहा.

घड़ीसाज ने दुबारा सिर हिलाया और कहा ''यह तो बिलकुल ठीक है. हां, मेरे विचार से भी इसे भूल से ही फेंका गया है. घड़ी तो बिलकुल ठीक चल रही है और ऐसे में मुझे जो भी इसके विषय में मालूम है तुम्हें बता देता हूं जिस व्यक्ति के लिये मैंने इसे बनाया था उसका नाम 'घंटा' था. वह अपने को 'ए. घंटा' के नाम से पुकारता था. मैं सदा सोचता था कि यह व्यक्ति कोई मजाक करता है क्योंकि वह मेरे पास बहुत बार घड़ी ठीक करने को लाता रहता था.'' ''यह कोई असली नाम जैसा नहीं लगता,'' ''राजू बोला परन्तु यदि उन्होंने अपना पता भी आपको दे रखा है फिर ठीक है. हम वहां पहुंच सकते हैं.''

''बदकिस्मती से उन्होंने मुझे केवल टेली-फोन नंबर ही दिया था'' यह कह कर मि० फन्टूश ने शोकेस के पीछे से एक भारी रिकार्ड की किताब निकाली और कुछ पन्ने पलट कर रुक गये.

'ए घटा' टैलीफोन नंबर . . . .

और नंबर उन्होंने श्याम को बताया जो कि रिकार्ड रखने वाला है, उसने तुरन्त नंबर नोट कर लिया.

क्या आप हमें कुछ और भी बता सकते हैं श्रीमान् ?'' राजू ने पूछा, जिस पर घडीसाज ने सिर हिला दिया. 'बस' शायद मैंने कुछ अधिक ही बता दिया है," वह बोला, ''अब मुझे क्षमा करो, मुझे काम करना है, समय बहुत मूल्यवान है और इसका सदुपयोग करना चाहिये, नमस्कार, ''और वह भीतर खिसक गये. राजू ने कंधे उचकाये.

''हमने कुछ जानकारी तो हासिल कर ही ली है,'' वह बोला ''अब बाहर चल कर हम इस नम्बर पर फोन करते हैं. नजदीक ही मैंने एक टेलीफोन बूथ देखा था.''

''तुम क्या पूछोगे ?'' बूथ में घुसते राजू से महिन्दर ने पूछा, ''मैं पता मालूम करने के लिये एक तरकीब लड़ाऊंगा.''

राजू ने उत्तर दिया।

महिन्दर और श्याम भी राजू के साथ बूथ में घुस गये, ताकि बातचीत सुन सकें. पहले जासूस ने सिक्का डाल कर नम्बर घुमाना आरम्भ किया . एक क्षण बाद एक स्त्री का स्वर सुनाई दिया.

''नमस्कार, राजू अपनी आवाज को मर्दो जैसी भारी बना कर बोला. राजू में अभिनय करने की काफी क्षमता थी जिसका प्रयोग वह समय-समय पर करता रहता था. ''मैं टेलीफोन ऐक्सचेंज से बोल रहा हूं. हमें क्रास बार सर्कट में कुछ परेशानी हो रही है.''

''क्रासबार सर्कट,'' मैं कुछ समझी नहीं,'' स्त्री बोली ''आपके क्षेत्र में बहुत सी पार्टियों की शिकायत आ रही हैं कि उनके फोन गलत नम्बर पर मिल रहे हैं.'' राजू बोला ''क्या आप कृपया बता सकेंगी आप किस पते से बोल रही हैं, इससे हमें सर्कट चैक करने में सहायता मिलेगी.''

''पता ? क्यों, यह ३०९ मॉडल टाउन है, परन्तु मुझे समझ नहीं आ रहा इससे कैसे -----'' और उनकी आवाज एक चीख के कारण सुनाई देनी बन्द हो गई. चीख किसी भारी भरकम व्यक्ति की अत्यन्त डरी हुई भारी आवाज में थी. तीनों लड़के चीख की आवाज से एक दम कूद पड़ते यदि वे बूथ में फंसे खड़ न होते.

और फिर फोन कट गया.

चिल्लाने वाला घंटा

''यह ही ब्लाक है,'' राजू बरखासिंह से बोला'' ''कार को अहिस्ता कर लो' ताकि हम घरों के नम्बर देख सकें''. ''अच्छा राजू साहब'', बरखासिंह बोला, ''वह धीरे-धीरे सड़क पर आगे बढ़ता रहा, शहर का यह भाग कुछ पुराना था तथा यहां स्थित मकान पुराने परन्तु काफी बड़े थे.

''वह रहा'', महिन्दर बोला.

शेष पृष्ठ २८ पर

बन्द करो बकवास

रंगोली
हम सब अपने-२ जीवन में किसी न किसी र्रे में टाइप होते रहते हैं। उसकी छाप हमारे हर काम में नजर आती है। होली के रंगों में भी टाइप की छाप मिलती है।
गर्ज यह कि रंग फैंकने के ढंग को देख आप बता सकते हैं रंग फैंकने वाला कौन चिड़िया है। इस फीचर में ऐसे ही फार्मूलों की रंगोली हम आपके लिये सजा रहे हैं। इस बार की होली में आजमा कर देखिए हम कितनी बेपर की और कितनी घर की उड़ाते हैं।
पिचकारी से रंग गलत जगह से फूट निकला है तो सच मानिये यह भाई प्लम्बर ही होगा।
आप पर पड़ा रंग पकौड़े की सी आकृति बना गया है तो जानिये रंग जिसने आप पर फैंका है वह आपकी गली के ही हलवाई का लड़का है।
अगर कोई आपसे लाल-पीला व नीला रंग लेकर होली खेलने आया है तो या तो वह खुद या उसका बाप ट्रैफिक पुलिस में होगा।
अगर आपकी तरफ फैंके जा रहे गुब्बारों का निशाना ठीक ही नहीं बैठ रहा और आपको एक भी नहीं लगा तो इनको फैंकने वाला और कोई नहीं हमारी हॉकी टीम का कोई फारवर्ड ही होगा।
अगर आप पर ऊपर पीला और नीचे की ओर काला रंग डाला गया है तो यह भाई टैक्सी
अगर कोई रंग इस प्रकार फैंके जैसे पौधे को पानी दे रहा हो तो समझो यह माली का भाई भतीजा होगा।
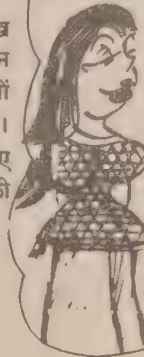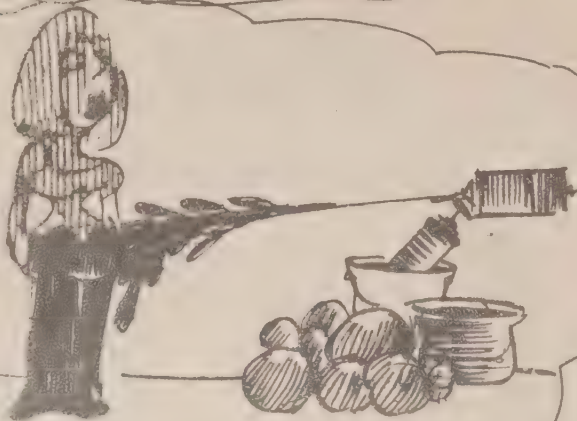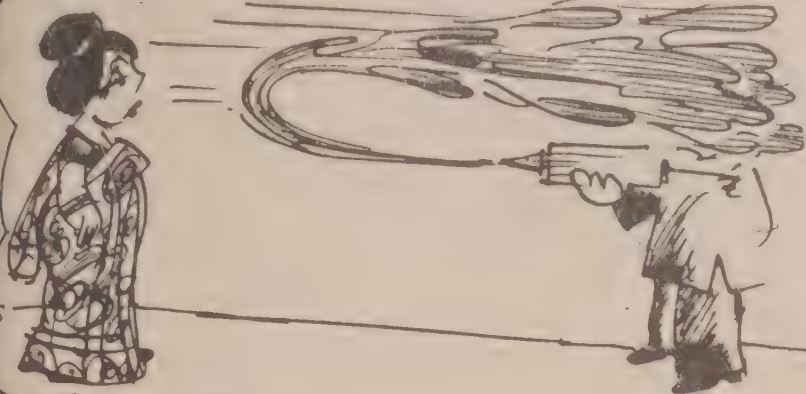
पिचकारी चलाई गयी है। ठीक उसी वक्त तेज हवा का झौंका रंग मोड़ कर रंग मारने वाले के मुंह की ओर ही ले जाता है, तो यकीन जानो यह कोई किस्मत का लल्लू है हमेशा इसे लेने के देने पड़ते रहे हैं।
पिचकारी का रंग आप तक पहुंच ही नहीं पा रहा है समझो रंग मारने वाला स्टेनो टाइपिस्ट होगा। पिचकारी भी शार्टहैंड में चला रहा है।
आपको गुब्बारा लगा लेकिन फटे बगैर नीचे गिर गया तो समझो इसे फैंकने वाला बड़ा बदनसीब है। हमेशा नाकामयाब रहा है। ऐन मौके पर नसीब दगा दे जाती है।
आप पर फैंके गये रंग में रंग इतना फीका है कि वह पानी पानी ही लगता है तो यकीन जानो इसे फैंकने वाला और कोई नहीं आपका दूधिया ही है।
इसमें तो शक की गुंजाइश ही नहीं कि यह फौजी भाई होंगे। पिचकारी को ऐसे पकड़ेंगे जैसे थ्री नॉट थ्री रायफल हो।
रंग की जगह कोई पिचकारी ही चलती साइकिल से आप की ओर फैंके तो शर्त लगा लो यह लड़का आपके अखबार वाले का ही लड़का होगा।
यह सज्जन तो डाक्टर ही होने चाहिएं। पिचकारी इंजेक्शन लगाने की मुद्रा में बांह की ओर बढ़ेगी।
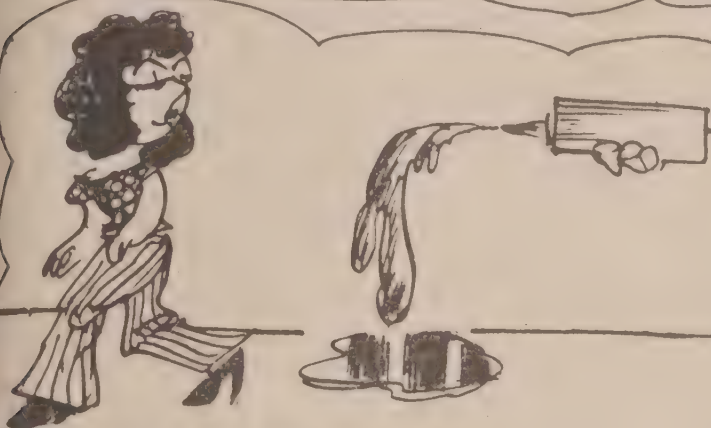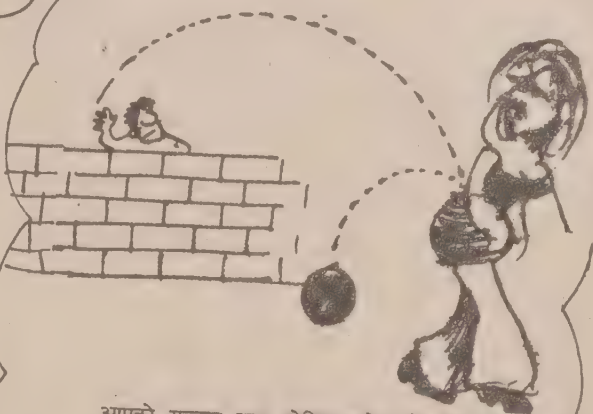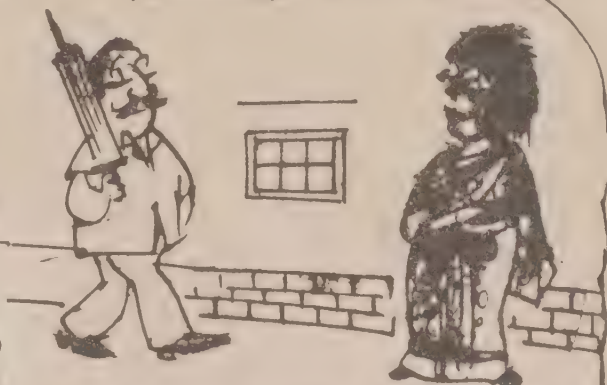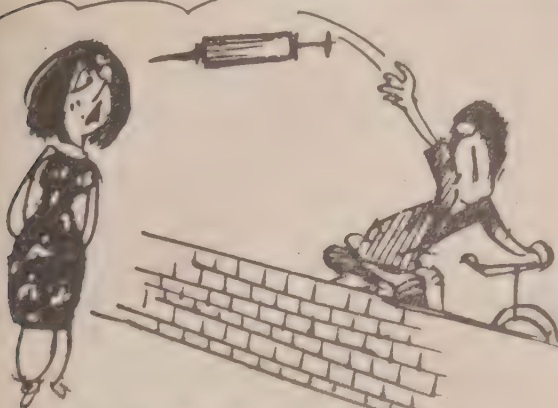
विश्व कप हॉकी

विभिन्न देशों के रिकार्ड

किस देश का कौन सा स्थान रहा

	१९८२	१९७८	१९७५	१९७३	१९७१
पाकिस्तान	१	१	२	४	१
जर्मनी	२	४	३	३	५
आस्ट्रेलिया	३	३	५	—	८
हॉलैड	४	२	९	१	६
भारत	५	६	१	२	३
रुस	६	—	—	—	—
न्यूजीलैड	७	—	७	७	—
पोलैड	८	९	१०	—	—
इंगलैंड	९	७	६	६	—
मलेशिया	१०	१०	४	११	—
स्पेन	११	५	८	५	२
अर्जेन्टीना	१२	८	११	९	१०
कैनेडा	—	११	—	—	—
आयरलैंड	—	१२	—	—	—
इटली	—	१३	—	—	—
बैल्जियम	—	१४	—	८	—
घाना	—	—	१२	१०	—
जापान	—	—	—	१०	९
केन्या	—	—	—	१२	४
फ्रांस	—	—	—	—	७

१९८२ विश्व कप परिणाम

	मैचखेले	जीते	हारे	ड्रॉ	अंक	सफलता प्रतिशत
पाकिस्तान	७	७	०	०	१४	१००-००
आस्ट्रेलिया	७	६	१	०	१२	८५.७१
भारत	७	५	२	०	१०	७१.४२
जर्मनी	७	४	२	१	९	६४.२८
हॉलैंड	७	३	३	१	७	५०-००
इंगलैंड	७	३	३	१	७	५०-००
न्यूजीलैंड	७	३	४	०	६	४२.८५
रुस।	७	१	३	३	५	३५.७१
स्पेन	७	२	४	१	५	३५.७१
पोलैंड	७	२	५	०	५	२८.५७
मलेशिया	७	१	५	१	३	२१.४२
अर्जेन्टीना	७	१	६	०	२	१४.२८

चना

● खूबसूरत लड़की एक गजल की तरह होती है। उससे शादी होने पर गजल का साथ देने के लिये आपके बाजे बजने लगते हैं।

● एक शराबी समुद्र तट पर नंगा घूम रहा था। अपने सारे कपड़े उसने कंधे पर डाल रखे थे। पुलिस वाले ने पूछा, ''क्यों हज़रत यह क्या तमाशा है? तुमने कपड़े कंधे पर डाल रखे हैं और नंगे घूम रहे हो?''

शराबी ने उत्तर दिया, ''यहां कोई ओट ही नज़र नहीं आ रही है जिसके पीछे जाकर कपड़े बदल सकूं! ओट की तलाश में ही तो घूम रहा हूं।''

● परीक्षा में ज्योमेट्री का पेपर था। अगली सीट पर बैठी लड़की ने अपने पर्स से छोटा सा शीशा निकाला और शीशे में देख पीछे वाली की नकल की। उसके उत्तर उल्टे थे क्योंकि शीशे में बिम्ब उल्टा पड़ रहा था। परीक्षा में पीछे वाली को 81 नम्बर मिले और नकल करने वाली को 18।

● तेलाक का मुकदमा था—पत्नी ने शिकायत की, ''माई लार्ड, मेरे पति ने हमारे सोने के कमरे में बकरी पाल रखी है। कमरे की खिड़कियां बंद रहती हैं अतः बदबू के मारे रहना दूभर हो गया है।'' जज ने पूछा, ''आप खिड़कियां क्यों नहीं खोलती?''

पत्नी बोली, ''खिड़की खोल दूं तो मेरी सारी मुर्गियां भाग नहीं जायेंगी?''

● एक आदमी दूसरे से बोला, ''यार रात मैंने सपना देखा कि मैं एक बहुत बड़ा केक खा रहा हूं। मैं खाता ही चला गया और उसे खत्म कर दिया।''

दूसरा, ''फिर?''

पहला, ''सुबह मैंने देखा कि मेरा फोम रबड का गद्दा गायब है।''

● संघ लोक सेवा आयोग द्वारा डाक्टरों की मौखिक परीक्षा में पूछा गया, 'लू लग गई है, क्या उपचार करेंगे?''

दस में से चार का उत्तर था, 'रोगी को कम्बल में लपेट देंगे।''

● अंतिम वर्ष की परीक्षा में मौखिक परीक्षा में प्रश्न, डा. राजेश! तीन मास का बालक निमोनिया से पीड़ित है, क्या देंगे?''

राजेश 'सर! टैट्रासाइक्लीन तीन-तीन चम्मच दिन में तीन बार।'' फिर सोच कर कहा, 'नहीं श्रीमन्! आधा-आधा चम्मच दिन में तीन बार।''

परीक्षक ने शान्त स्वर में कहा, 'खेद है

रंगबदरंग

कुछ लोगों का पेशा ही ऐसा होता है कि उनका रंगों से रोज ही वास्ता पड़ता रहता है। कुछ न कुछ रंग चढ़ा ही रहता है। ऐसे लोगों के लिये आम लोगों की होली कोई अर्थ नहीं रखती। इन सज्जनों की भी होली में शामिल करने के लिये कुछ सुझाव पेश है। उन्हें भी पता लगेगा हां होली खेले हैं।

इनके कपड़े हमेशा काले दागीले रहते हैं। होली के दिन इन्हें ड्राइक्लीनर की दुकान में बंद करके रखा जाये जहां एक भी गंदा कपड़ा नजर न आये।

साठे साहब मुद्दत से रंगीन टी. वी. का राग अलापते रहे हैं। होली के रोज उनके घर जाकर उनके टी. वी. को पेट करके आधा काला व आधा सफेद यानी ब्लैक एंड व्हाइट कर दिया जाये।
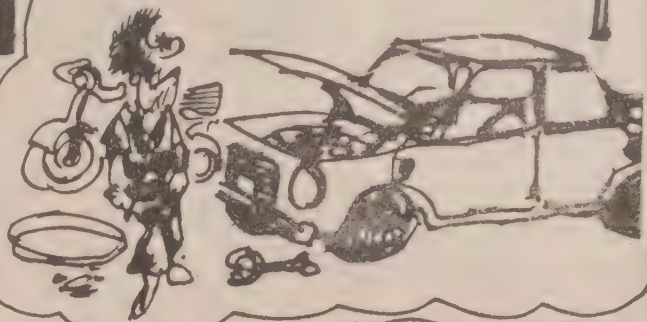
वकील लोग रोज काले को सफेद और सफेद को काला करते रहते हैं? होली को वकील भाई अपने यार दोस्तों को इकट्ठा कर अपने वर्ष भर की काली करतूतों का कच्चा चिट्ठा खोलें। काले को काला और सफेद को सफेद ही रहने दें। होली मन जायेगी दिल का बोझ हलका होगा।

सेठ भाई चौबीस घंटे काले धंधें और काले पैसे के चक्कर में पड़े रहते हैं। होली को इन्कम टैक्स वाले उनके घर जायें। उनका चेहरा पीला पड़ जायेगा कुछ तो दूसरा रंग नजर आया।

रंग साजों का तो रोज का वास्ता ही रंगों काहै। होली के अवसर पर उनके मित्र रिश्तेदार उन्हें बिना टिकट लगे पत्र भेजें। कुछ तो उन्हें बदरंग देखने को मिलेगा। उनकी होली इस तरह मनेगी।

रेल इंजन में कोयले झौंकने वाले भाई काले ही बने रहते हैं। होली पर उन्हें रुई पींजने वाली फैक्ट्री के अन्दर ले जाकर खड़ा कर दिया जाये ।वर्ष में एक बार तो सफेदी चढ़े।

जो सज्जन आटा पीसने की चक्की में काम करते हैं उन पर आटे की सफेद परत चढ़ी ही रहती है। होली के अवसर पर उनकी बीबियां किसी और के साथ भाग जायें। उनके मुंह पर कालिख पुत जायेगी। होली मन जायेगी।

प्र० तांबा कहां से निकाला जाता है ?

उ० : तांबा एक अत्यन्त ही आम तथा उपयोगी धातु है यह प्रकृति में दो रूपों में पाई जाती है। एक धातु का अपना प्राकृतिक रूप यानी तांबा धातु, तांबे के रूप में, तथा दूसरा यह दूसरी धातुओं के साथ मिश्रित अवस्था में पाया जाता है। लगभग 160 ऐसी मिश्रित धातु और होतीं हैं जिनसे तांबा पाया जाता है। संसार में मिलने वाली तांबे की सप्लाई का लगभग आधा भाग एक चमकदार पीले रंग की धातु चालको पिरिइट से उपलब्ध होता है : इस मिश्रित धातु में तांबा, लोहा तथा सलफर होता है, इसमें तांबे की मात्रा 34·5 प्रतिशत होती है, मिश्रित धातु गहरे मटमैले रंग की चाल को साईट में तांबे की मात्रा और सभी मिश्रित धातुओं से अधिक 80 प्रतिशत होती है।

मिश्रित धातुओं से तांबा अलग करने के लिए सबसे पहले धातु का बारीक चूरा कर लिया जाता है फिर यह चूरे को फ्लोटेरान अर्थात् धातु तैरने वाले टैंकों में धोया जाता है। ये टैंक पानी से भरे रहते हैं जिसकी ऊपरी सतह पर कोई तेल मिश्रित तत्व रहता है। टैंक के निचले भाग में इसके बाद कम्प्रैस्ड हवा फूकी जाती है इस हवा तथा तेल के मिलने से पानी के ऊपर मोटे झाग एकत्रित हो जाते हैं। और कच्ची धातु के कण इस झाग से चिपक जाते हैं। इसके पश्चात् इस कच्ची धातु को इसका सलफर जलाने के लिए आग से जलाया जाता है।

सलफर को अलग कर लेने के बाद इस कच्चे खनिज को पिघलाया जाता है जिससे इस खनिज में मिला लोहा अलग किया जाता है, अन्त में इस खनिज को कनवरटर में डाला जाता है जहाँ इसमें से दुबारा हवा फूकी जाती है जो पिछले धातु की बची अधिकतम अशुद्धियों का जला देती है।

अब यह धातु ब्लिस्टर तांबे का रूप ले लेती है जो लगभग 98 प्रतिशत शुद्ध होता है। उद्योग में प्रयोग करने के लिए ब्लिस्टर तांबे को और शोधा जाता है, जो कार्य विद्युत की सहायता से किया जाता है, इस प्रकार उपलब्ध धातु करीब 99·9 प्रतिशत शुद्ध होती है।

सम्भवत: तांबा धातु मानव द्वारा सबसे पहले प्रयोग लाई गई होगी क्योंकि यह धातु शुद्ध धातु रूप में भी उपलब्ध है, जो कोई और धातु नहीं होती।

प्र० : वायुमण्डल का कितना भार है ?

उ० : पृथ्वी वायु की एक मोटी चादर से घिरी हुई है। इसे पृथ्वी का वायुमण्डल कहते हैं। पृथ्वी का वायु मण्डल लगभग 20 गैसों से बना हुआ है इनमें प्रमुख दो आक्सीजन और नाइट्रोजन हैं, इसमें नमी तथा मिट्टी के कण भी होते हैं।

वायु तत्व है और हर तत्व के समान इसका भी भार होता है। भार किसी भी तत्व पर के गुरुत्वाकर्षण का तोल होता है। उदाहरणार्थ यदि किसी पत्थर को कांटे पर रखने से उसका भार दस किलो है तो इस का अर्थ है। गुरुत्वाकर्षण शक्ति इस पत्थर को दस किलो की शक्ति से खींच रही है।

इसी प्रकार पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति गैस के हर अणु तथा वायुमण्डल की मिट्टी को भी खींचती है और क्योंकि हमारा वायुमण्डल वायु का एक बहुत बड़ा सागर है, इसका भार है। यदि किसी प्रकार इसको दबाकर छोटा कर तराजू पर रखा जा सके तो इसका भार लगभग 5.171,000,000,000,000 टन होगा।

वायु हम पर सब ओर से दबाव डालती है, इस क्षण भी लगभग एक टन वायु आपके ऊपर दबाव डाल रही है। फिर भी हमें इसका पता नहीं चलता क्योंकि हमारा शरीर इस दबाव के साथ रहने का आदी है।

वायु का दबाव समुद्र सतह पर सबसे अधिक होता है, यहाँ दबाव 14·7 पाउँड प्रति वर्ग इंच होता है, इसका कारण यह है कि यह वायुमण्डल का सबसे निचला भाग होता है। ऊँचाई पर जाने पर हवा का दबाव घट जाता है और यही कारण हैं अन्तरिक्ष सूट तथा अधिक उँचाई पर उड़ने वाले वाययानों के केबिन प्रेशराईज्ड होते हैं। अर्थात् इनके डिजाईन ऐसे होते हैं जिससे हमारे शरीर की आवश्यकता अनुसार वायु दबाव बनाया जाता है।

पृथ्वी का वायुमण्डल ही पृथ्वी पर जीवन होने का कारण है, यह वायु ही है जिसमें हम सांस लेते हैं, यह वायुमण्डल ही हम सूर्य की कई प्रकार की किरणों से बचाता है साथ-साथ अधिक गर्मी और अधिक सर्दी से भी बचाता है और भी कई इसके लाभ हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मंग फू फाइटिंग

पिचकारी की मार से बचाव।

कुंग फू—जूडो-कराते कला का होली में उपयोग

नाखून लम्बे हों तो ब्रूस ली स्टायल में दूसरों के हाथ में ही गुब्बारा फोड़ना।

कराते चॉप इंटें तोड़ सकता है तो पिचकारी क्यों नहीं तोड़ सकता

दीवार पर कतार में गुब्बारे रख एक ही वार से सारे गुब्बारे निशाने की ओर रवाना किये जा सकते हैं।

झटके से पीछे झुक कर रंग मलने वाले को अपने हाथ मलने पर मजबूर किया जा सकता है।

गंदा नाला पास में हो तो होली खेलने आये दुश्मन को ताइयोतोशी दाव द्वारा उसमें फैंका जा सकता है।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

प्रकाश चन्द्र बोयरा, मद्रासः सांच को आंच नहीं इसका क्या मतलब है?

उ.: आप एक प्लेट में पांच चम्मच पानी डाल कर उस में तीन चम्मच नमक घोलिये. फिर उस नमक मिले पानी में पांच रुपये का करारा नोट डुबो दीजिये. नोट अच्छी तरह भीग जाये तो उसे निकाल कर धूप में सुखा लीजिये. फिर उसे आंच पर जलाईये तो जलेगा नहीं. नोट सच्चा है. और नीचे आंच है. इसीलिये कहा गया है ''सांच को आंच नहीं. मजाक की बात नहीं है. आप यह दीवानगी कर के देखिये प्रकाशचन्द्र जी.

कृपाल सिंह, लुधियानाः चाचा जी आप को मजनू बनने का कितने साल का तजुर्बा है?

उ.: हमेंतो पल भर का तजुर्बा याद है. फिर किसी के दामन से हमारी धोती बंध गई. बाकी के तजुर्बे का हिसाब आप हमारा सर देख कर लगा लीजिये.

राजेन्द्र पाल अरोड़ा, रुद्रपुर, नैनीतालः भगवान और इन्सान में क्या अंतर है?

उ: बहुत बड़ा अंतर है. भगवान की शक्ति ने इन्सान बनाया और इन्सान की भक्ति ने भगवान बनाया.

पुष्पराज सचदेव सहारनपुरः अगर पशु भी मनुष्य की तरह एटम बम बनाने लगते तो क्या होता?

उ.: तो मनुष्य इस बदनामी से बचा जाता कि वह आज पशु बन गया है.

सुभाष, पंजाबपुरा, बरेलीः चाचा जी, कोई प्रेमी प्रेमिका के सामने रोये तो क्या होता है?

उ.: वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है. इस शेर में है आप के प्रश्न का उत्तरः

हमने तो उन की याद में रो-रो के टब भरे,
वो तौलिया लाय नहाये चले गये.

गुरमीत सिंह, मीता, नई दिल्लीः दोस्त की दोस्ती पर कब नाज होता है?

उ.: जब दोस्त की जेब भरी होती है और उसमें हमारा हाथ होता है.

उपेन्द्र कुमार द्विवेदी, ''गुरु'', वाराणसीः इश्क किसे कहते हैं?

उ.: इस प्रश्न के उत्तर में एक शेर पेश है उपेन्द्र जीः

हम इन्तजारे यार में जागे तमाम रात,
अच्छे भले थे इश्क ने उल्लू बना दिया.

राजीन्द्र सिंगल, अशोक सिंगल, अबोहरः चाचा जी, आज का विद्यार्थी पढ़ाई से अधिक फैशन पर ध्यान क्यों देता है?

उ.: क्योंकि पढ़ाई भी आजकल बस एक फैशन [illegible] गई है.

पंडित मेवालाल परदेशी, महोबाः आजकल इन्सान लालची क्यों हो गया है?

उ.: क्यों पहले कहते थे, ''जितनी चादर हो उतने पांव पसारो.'' पर आज हालत यह है कि एक के फैले पांव अपनी चादर से निकल कर दूसरे की चादर में घुसने लगे हैं.

सतीश भईया, ''कल्लु'', सतनाः चाचा जी, मैं उन्नति करना चाहता हूं. क्या करुं?

उ.: दूसरों के कंधों पर सीढ़ी लगा कर चढ़ना सीखिये.

प्रहलाद जसवानी, कृष्णा कन्हैया, मण्डलाः किसी इन्सान के जीवन का सब से बड़ा बोझ क्या हो सकता है?

उ.: इस ओर ध्यान न देना कि कहीं वह धरती पर बोझ तो नहीं बन गया है.

मानसी दास, जमशेदपुरः चाचा जी, जिस दिन सैंसर ''एडल्टस'' वाली फिल्में पास करना बन्द कर देगा उस दिन से हमारे देश के लड़के शरीफ़ बन जायेंगे. क्या मैं गलत कह रहा हूं?

उ.: आप एक बात भूल रहे हैं मानसीदास जी, कि आप से तीन-चार सौ साल पहले जब फिल्म बनाने का किसी ने सपना भी नहीं देखा था, हमारे देश के लड़के तब भी शरीफ नहीं थे. अकबर के बेटे शहजादा सलीम ने किसी प्रकार भी कोई फिल्म नहीं देखी थी. पर यह आप अच्छी तरह जानते हैं कि उस ने अनारकली के साथ क्या-क्या गुल खिलाये.

अबदुर्रहमान, टोंक : आफ फ्रैंडस क्लब में लड़कियों के फोटो क्यों नहीं देते?

उ : क्योंकि हमें डर है कि लड़के उन्हें उल्टे-सीधे पत्र लिखने लगेंगे.

सुधा उपाध्याय, जबलपुर : चाचा जी, दुनिया में सब से पहले रोने का आविष्कार किसने किया?

उ : जिस ने दुनिया में सब से पहले हंसने की गलती की.

हरीश बहल, शिवपुरी, लुधियाना : देश की बढ़ती हुई बरबादी का जिम्मेदार कौन है?

उ : देशवासी.

प्रहलाद जसवानी, कृष्णा कन्हैया, मण्डला : चाचा जी, किसी नेता को अपनी ग़लती का एहसास कब होता है?

उ.: जब उसे अपनी लुटिया डूबती नज़र आती है. देश का जहाज़ डूब रहा हो, उस से उसे क्या लेना देना है.

नरेन्द्र गुलाटी, शिवपुरी, लुधियाना : चाचा जी, इन्सान अपनी औकात कब भूल जाता है?

उ. : जब उसे [illegible] कि वह कभी इन्सान था.

सुचित कुमार गुप्ता, राय बाज़ार, रांची : दुनिया में वह कौन सी चीज़ है जो हर मनुष्य को अच्छी लगती है?

उ. : मुंह पर अपनी तारीफ़, पीठ पीछे दूसरे की बुराई.

कमल कान्त, बालोद, दुर्ग : मानव जीवन के सभी दुर्गुण दूर करने का कोई उपाय बताइये.

उ. : नेकी को दिखाने वाला दीवाना पढ़िये और दूसरों को पढ़ने की प्रेरणा दीजिये.

मो. आरिफ, जबलपुर : शैतान से भी बड़ा शैतान आज कौन है?

उ. : क्यों ऐसा प्रश्न कर के आप हमारी खाट खड़ी करवाने पर तुले हैं. हमारे मुंह के दो दांत और सर के चार बाल क्या आप को बहुत बुरे लगते हैं?

ली.बी.एन. पाटिल : मैं ऐसा कौनसा काम करूं जिस से सभी लोग मुझ से प्यार करें?

उ. : अपनी नोटों से भरी जेब में लोगों के हाथ पड़े रहने दीजिए. उन्हें अपनी थाली से खाना खाने दीजिये, अपने रुमाल से नाक साफ़ करने दीजिये और अपनी कमीज़ से उन्हें अपने जूते साफ़ करने दीजिये. सब आप से प्यार ही प्यार करते रहेंगे.

रवि भाटिया, शंकर रोड मार्किट : क्या आप के पैन फ्रेंडस क्लब में लड़कियां अपनी फ़ोटो छपवा सकती हैं?

उ. : वे तो छपवा सकती हैं, पर हम नहीं छाप सकते रवि भाटिया जी. क्यों कि हमें डर है कि हमारे पाठक चाचा बातूनी जैसे लड़के को जैसे पत्र लिखते हैं वैसे ही उन्हों ने लड़कियों को भी लिखे और ऐसे ही उत्तर उन्हों ने भी दिये तो हमारी हालत इस दोहे जैसी हो जायेगी :

चलती चिट्ठी देख के दिया चचा है रोय,
दो पाटन के बीच में साबत बचा न कोय.

आपस की बातें
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल
होली – खटिया खड़ीकरलाल की

लगता है इस साल होली को थम दोनों की खाट खड़ी होने वाली है। मशहूर बहुरूपिया जालसाज़ जिसकी आजकल अखबारों में चर्चा है ने थम दोनो को लवलैटर लिखा है,'' प्यारे फटीचर जासूसों, मैंने फैसला कर लिया है कि इस बार मैं होली तुम्हारे साथ खेलूंगा। मुझे पता है तुम होली के नाम से ही घबराते हो, हर साल होली के रंगों से बचने के लिये तिकड़में लडाते हो। मैं तुम्हें बच कर जाने नहीं दूंगा। दिन दहाड़े तुम पर रंगों की बौछार डालूंगा। तुम बच सकते हो तो बच कर दिखाना। जब सी. बी. आई मेरा कुछ न बिगाड़ सकी तो तुम क्या कर लोगे . . .
मुझे दे यह खत

यह बदमाश आगे लिखता है . . .,'' मेरी होली की शुरुआत इसी पत्र से होती है। जब यह पत्र तुम्हें मिलेगा तो तुम तपते लाल हो जाओगे। जब तपती लाली तुम्हें छोड़ेगी तो तुम पर काले काले दाग पड़ चुके होंगे . . .'' क्या मतलब हुआ इसका ? मेरी समझ में नहीं आया

इस चिट्ठी पर चिकने-चिकने दाग तो नहीं पड़े हैं ?
फौरन इस चिट्ठी को छोड़ दे और माचिस से इसमें आग लगा दे।

पड़े हैं। मैंने सोचा वह सिर पर बालों में तेल ज्यादा लगाता होगा या उसने यह लैटर हमें पकौड़े खाते-खाते लिखा होगा। थमें कैसे पता लगा कि इस पर दाग होंगे ?
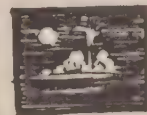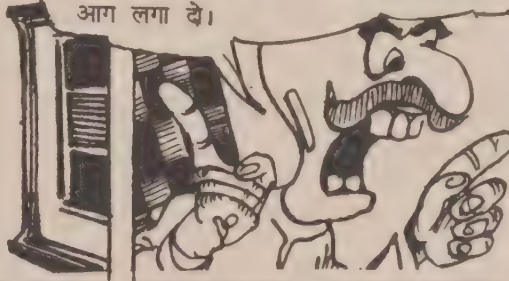
थमने पढ़ा नहीं कि खड़ीकरलाल ने अपराधी बनने से पूर्व मैडिसन और कैमिस्ट्री में कोर्स किया था लैटर पर चिकने दाग होने का साफ मतलब है कि लैटर को कल्चर्ड चेचक के कीटाणुओं द्वारा इन्फैक्ट किया गया है। तभी तो उसने लिखा है कि लैटर मिलने पर तुम तपते लाल हो जाओगे और लाली चली जायेगी तो काले-काले दाग पड़ जायेंगे। खैर मनाओ कि समय पर हमें इसका पता लग गया। खूब गर्म पानी में टेटोल की पूरी शीशी उल्टी कर अपने हाथ खूब धोओ। नाखूनों के अन्दर तक सफाई करो।
मैं तो पूरे शरीर को ही डुबकी दे देता हूं।
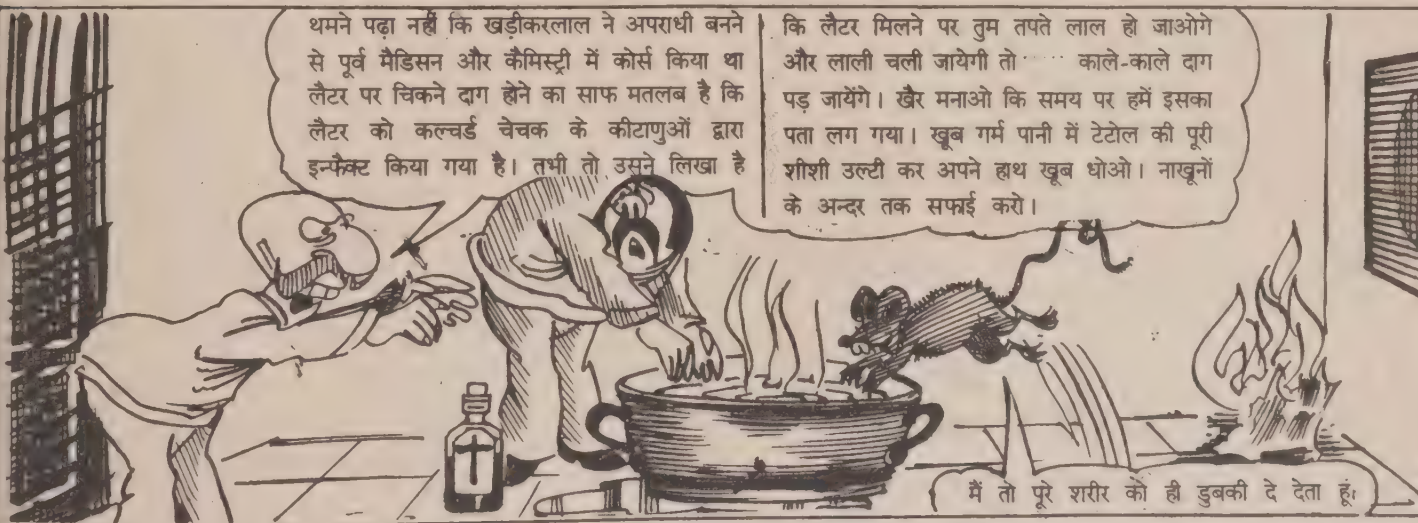
हमें काफी होशियार रहना पड़ेगा। एक पढ़े-लिखे जालसाज़ से इस बार हमारा पाला पड़ा है।
होली तो कल है। हमें जल्द ही उससे निबटने का पूरा इन्तजाम करना होगा, शायद वह भेस बदल कर होली खेलने आयेगा।
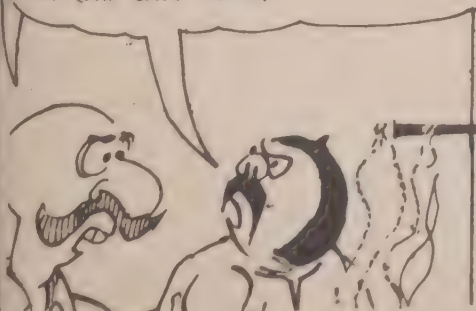
अपने सारे दरवाजे और खिड़कियों की चिटकनियों और ताले चैक कर लो। आज हम दरवाजों पर नये ताले ला कर लगा देंगे। पुराने लॉकों की शायद मौका पाकर उसने डुप्लीकेट चाबियां बनवा ली हों।

लेकिन घबराने की बात नहीं है। हम उसको वह पटकनी देंगे कि वह भी उम्र भर याद रखेगा कि किसी से पाला पड़ा था। वह जालसाज हुआ तो क्या है हम भी लंदन ट्रेन्ड जासूस हैं। बस जरा चौकसी बरतनी होगी।
पता नहीं उसने स्कीम क्या बना रखी होगी।

हा हा हा हा! साधू संत सब सोये पड़े हैं आजा अन्दर में कोई न मन्दर में। सब घोड़े बेच कर सोये पड़े हैं। बेवकूफों ने दरवाजों के ताले बदल कर सोच लिया कि खड़ीकर लाल को रोक सकेंगे। यह नहीं सोचा खड़ीकर लाल बैंकों के लॉकर भी चार मिनट के अन्दर खोल लेता है। जिस देश में ऐसे बौड़म जासूस हों उस देश का क्या हाल होगा?
रात को सोने से पहले पान खाते हैं मैंने रात को पनवाड़ी से मिल कर तीनों के पान में चार-चार गहरी नींद की गोलियां पिसवा कर कत्थे की जगह लगवा दी थीं, सुबह दस बजे से पहले इनकी नींद नहीं खुलने वाली। लंदन ट्रेन्ड जासूस बनते हैं।
यह सज गया जासूसों की डाइनिंग टेबल पर खाट खड़ी करने वाले खड़ीकर लाल बी. ए. के औजारों का सैट। इन औजारों की सहायता से खड़ीकर-लाल गधे को खोल कर दोबारा जोड़ कर घोड़ा बना सकता है। रेडियो को टी.वी. और आदमी को उल्लू बना सकता है। एक पैग स्कॉच व्हिस्की विद सोडा और हवाना सिंगार पीकर मैं अपने काम में जुट जाऊंगा और अपनी कारीगरी के वह उदाहरण प्रस्तुत करूंगा कि जासूसों को अपनी नानी की वीडियो रिकार्डिंग नज़र आयेगी।
आ ऽऽऽऽ! रात बड़ी गहरी नींद आई।
दरवाजों में नये लॉक वगैरह लगाते काफी देर हो गयी थी कल रात, खैर! देखते हैं खड़ीकर लाल क्या कर लेगा, हम दरवाजे ही नहीं खोलेंगे। चिड़िया भी हमारी इजाजत के बगैर यहां पर नहीं मार सकती।
नौ दस तो बज ही रहे होंगे
आह यह क्या है
पिचच!
माज़रा समझ में नहीं आया। तुम्हारे चप्पलों के ऊपर किसी ने रंग भरे गुब्बारे रखे थे। पैर रखते ही वह फट गये। कहीं यह खड़ीकर की होली की शुरुआत तो नहीं है?
सिलबिल के सिर पर से यह क्या निकल रहा है? लाल, पीला और नीला धुआं निकल रहा है गाढ़ा गाढ़ा!
कहीं इसकी खोपड़ी में भरे गोबर में आग तो नहीं लग गयी?
यह तो खड़ीकर लाल की कैमिस्ट्री का ही पक्का सबूत है। उसने रात को इसके बालों में और हाथों में अलग ऐसे रसायन लगा कर रखे जो आपस में मिलने पर रिएक्ट कर के धुंआ बनाते हैं। सुबह अभी उठने पर इसने बालों में हाथ फेरा उसके साथ ही रसायनिक क्रिया शुरु हो गयी।

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

पृष्ठ १७ से आगे

बरखासिंह ने कार को मोड़ कर रोक दिया, लड़के उतर कर घर की ओर बढ़े, सामने के घर को वे बड़ी दिलचस्पी से देख रहे थे। घर के सभी परदे बन्द थे तथा घर खाली सा ही प्रतीत होता था, सामने के दरवाजे के आगे दो पैड़ी थीं लड़कों ने उन पर चढ़ कर घर की घंटी बजाई.

काफी समय तक कुछ भी नहीं हुआ फिर आवाज के साथ दरवाजा खुला और एक अधेड़ आयु की महिला दिखाई दी. महिला थकी तथा दुखी दिखाई दे रही थी.

''क्षमा कीजिये, क्या हम मि. घंटा से बात कर सकते हैं?

राजू ने प्रश्न किया.

''हो सकता है यह उनका असली नाम न हो, परन्तु वह ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें घड़ियों में बहुत दिलचस्पी है, तथा वे यहां रहते हैं या फिर कभी रहते थे.''

''घड़ियों में दिलचस्पी? तुम्हारा मतलब मि० हरीश से होगा, परन्तु मि० हरीश तो . . . . .''.

''उन्हें कुछ न बताओ'', अचानक एक स्वर बीच में सुनाई दिया और साथ साथ ही सत्तरह बर्षीय काले बालों वाला लड़का महिला के सामने आ खड़ा हुआ।वह तीनों लड़कों की ओर देख कर गुर्राया ''मां इनसे बात भी मत करो, दरवाजा बन्द कर लो इनका यहां आ कर प्रश्न पूछने का कोई मतलब नहीं है. ''सुनो हरी यह तो बदतमीजी है,' महिला ने लड़के को डपटते हुए कहा—यह लोग अच्छे लड़के दिखाई देते हैं और मि० हरीश को पूछ रहे हैं जहां तक मेरा ख्याल है.

''क्या मि० हरीश ही कुछ देर पहले चीखे थे,'' राजू ने अचानक पूछा.

लड़के ने उसकी ओर घूरते हुए कहा : ''हां वही थे, वह उनकी मृत्यु के समय की चीख थी. अब तुम लौग यहां से तुरन्त भाग जाओ क्योंकि हमें मि० हरीश को दफनाना है.''

यह कह कर उसने धड़ से दरवाजा बन्द कर लिया. ''तुमने सुना! ''महिन्दर बोला ''उन लोगों ने किसी को मार दिया है और अब दफनाने की तैयारी कर रहे हैं।'' ''क्या हमें पुलिस नहीं बुला लेनी चाहिये?'' श्याम ने पूछा ''नहीं'' राजू बोला,'' किसी तरह इन लोगों को हमें अन्दर आने देना चाहिए मुझे हरी खिड़की में से झांकता दिखाई दे रहा है, मैंफिर से घंटी बजाता हूं।''

उसने जोर से घंटी बजाई दरवाजा एक दम खुल गया ''मैंने तुमसे चले जाने को कहा था, '' हरी गुस्से से बोला,हमें किसी के परेशान करने की जरूरत नहीं है,'' ''हम आप को परेशान नहीं करना चाहते,''राजू ने जल्दी से कहा ''हम एक रहस्य की खोज कर रहे हैं और हमें आपकी सहायता चाहिये, देखो यह हमारा कार्ड है.''

और साथ ही राजू ने एक कार्ड जैसा कि तीनों लड़कों के पास हमेशा होता था हरी को दिखाया— उस पर लिखा था

तीन जासूस

हम सब गुत्थियां सुलझाते हैं

? ? ?

पहला—राजू माथूर

दूसरा—महिन्दर सिंह

रिकार्ड तथा खोज—श्याम नरायण

प्रश्न चिन्हों का क्या अथ है, क्या इनका मतलब है तुम्हें कुछ मालूम नहीं है? हरी ने व्यंग्य पूर्वक पूछा.

''यह अनबूझे रहस्य तथा किसी भी प्रकार की अनबूझे पहेलियों और 'गुत्थियों का संकेत हैं, ''राजू ने उत्तर दिया, ''हमारा आदर्श वाक्य यही है, हम हर गुत्थी सुलझाते हैं, इस समय भी हम एक रहस्य की खोज कर रहे हैं यह एक बहुत ही अजीब घड़ी का रहस्य है, देखो यह रही घड़ी.'

उसने घड़ी निकाल कर हरी को थमा दी तथा उत्सुकता वश उसने तुरन्त घड़ी को उलट-पलट कर देखा.

''इसमें ऐसा क्या रहस्य है? हरी ने पूछा— ''हम अभी इसका प्रदर्शन कर सकते हैं यदि तुम हमें कोई बिजली का सर्कट इस्तेमाल करने दो.''राजू बोला, और साथ-साथ आगे बढ़ा मानो उसे पूरा विश्वास है कि हरी उसे भीतर आने देगा. हरी एक ओर हट गया और सब छोटे से अंधियारे गलियारे में घुसे जिसके एक ओर ऊपर जाने की सीढ़ियां थीं. दूसरी ओर एक बहुत बड़ा दादाजीघंटा टिक-टिक कर चल रहा था. घंटे के निकट ही मेजपर टेलीफोन लगा हुआ था.

श्याम और महिन्दर चारों ओर ध्यान से मि० हरीश के शव की खोज में थे परन्तु उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया. राजू ने घंटे के निकट बिजली का एक सोकिट देखा.

''मैं अभी घड़ी को यहां प्लग करता हूं, '' वह बोला,'' और अब मैं इसका अलार्म चलाता हूं सुनो! घड़ी ने एक बार फिर आपनी डरावनी चीख निकली अंधियोर गलियारे में श्याम और महिन्दर के रोंगटे खड़े हो गये.

''देखो !'' राजू ने घंटी का प्लग निकालते हुए कहा. ''अब कहो यह घड़ी रहस्यमयी है यानहीं, इसकी खोज होनी चाहिए?

''नहीं।। हरी ने रुखाई से उत्तर दिया'' कोई भी घड़ी को चीखने वाली बना सकता है, : सुनो' और मैं तुम्हें दिखाता हूं.''

उसने बड़े पुराने घंटे के पीछे हाथ डाल कर बिजली का तार निकाला और उसका प्लग लगाया. तीनों लड़कों के बाल सीधे खड़े हो गये जैसे ही उन्होंने एक आदमी की गहरी आवाज की चीख सुनी जो धीरे-धीरे उसे कम हो रही थी मानों कोई पहाड़ से नीचे गिर रहा हो. क्रमशः

फैण्टम-जंगल शहर

कैप्टन तुम्हें किसने हमें लेने भेजा था?
मावीटान हवाई अड्डे पर हमारे कमांडिंग अफसर जंगल पेट्रोल क कर्नल वोरबू ने भेजा था श्रीमता पामर बाकर

'तब' हमें मिलने क्यों नहीं आया?
क्या वह किसी विशेष कार्य पर गया हुआ है. यहां से आगे जाने के लिये वह गाड़ी आपके लिये खड़ी है
कहां जाने को?
FALK & BARRY 6/2

श्रीमती पामर वाकर आपकी यात्रा शुभ हो!
धन्यवाद
FALK & BARRY 6/3

कैप्टन वह है कौन?
किसी बहुत बड़े व्यक्ति की पत्नी कर्नल ने ऐसा ही करने की सख्त ताकीद की थी.

वह बाज वहां बैठा क्या कर रहा था?
प्राईवेट! जंगल पेट्रोल में प्रश्न नहीं पूछे जाते, तुम्हें केवल आदेशों का पालन करना चाहिये

ड्राईवर हम आखिर जा कहां रहे हैं?
सीधा आगे जा रहे हैं श्रीमती जी
अरे . . .क्या यह बाज है?
जी हां!
फराका फैन्टम का खूंखार बाज

अरे . . .क्या यह हमेशा तुम्हारे साथ ही गाड़ी में बैठा रहता है?
पहली बार आया है, श्रीमती जी
हमें तो शहर जाना है आखिर हम जंगल की ओर क्यों बढ़ रहे हैं?
FALK & BARRY 6/4

उसने कहा था कि वह हमारे लिये शहर में या जदीक ही हमारे निवास का प्रबन्ध कर देगा, स्थान मेरे दफ्तर के करीब ही होगा!
ड्राईवर मैं तुम से पूछ रही हूं तुम हमें कहां ले जा रहे हो?
श्रीमती जी आप अब शीघ्र ही देख लेंगी.

मुझे इस छोटे से व्यक्ति और उस खूंखार पक्षी के साथ जंगल में जाना अच्छा नहीं लग रहा.
देखो! देखो
गोब्बा नक्को
6/5

चित्र वर्ग पहेली १० रु इनाम

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें। दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयी ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

त क र न

ना क का प स

डं वा न

त मे श न क ह

ट रा म र च ह

उत्तर

अन्तिम तिथि:- २० मार्च १९८२

छींक से दृष्टि वापिस आ जाना—

जब आप को छींक आने वाली हो तो सावधान हो जाइये, मालूम नहीं क्या हो जाये।

जोर की छींक आने से कभी-कभी स्त्रियों की अंतड़ियां टूट जाती हैं, तो कभी-कभी असमय छींक आ जाने के कारण बस ड्राइवर से बस की टक्कर बिजली के खम्बे से हो जाती है।

खान में काम से अवकाश प्राप्त, एक कार्यकर्त्ता जिसकी आंखों की रोशनी खान की दुर्घटना में जाती रही थी, चौदह वर्ष बाद फिर से छींक आ कर दृष्टि पा, फिर से देखने लगा।

परन्तु अच्छी या बुरी छींक को रोका कैसे जा सकता है। पेरिस के एक डाक्टर का कहना है, छींक आने लगे तो, अपने तलवे सहलाओ, गालों में हवा भर कर जोर से बाहर फेंको, जबड़े को रगड़ो, ऊपर के होठ को उंगली से दबाओ या गरदन को अकड़ा लो। परन्तु यह सब करने में अत्यन्त फुर्ती करनी चाहिये क्योंकि सामान्य छींक १५२ फीट एक सैकिंड की रफ्तार से चलती है।

कुछ लोग अधिक भाग्यवान होते हैं जो थोड़ा सा नाक को बाहर से रगड़ कर ही छींक रोक लेते हैं।

सईद खान, १५ गुलाबेश्वर मार्ग, हाथीपोल अन्दर, उदयपुर, १७ वर्ष, गुडगुड करना।

मंगत राम शर्मा, राजसिंह पुर जिला, श्रीगंगानगर, २२ वर्ष, गाना व नाटक में भाग लेना।

पंकज गर्ग, १६, चन्द्रपुरी, गाजियाबाद (उ. प्र.) ११ वर्ष, टेबल टेनिस खेलना।

अरविन्द खुरानियां, तलाई बाजार, शहर-कैथल-१३२०२७, १७ वर्ष, पत्र मित्रता, टिकट संग्रह।

गणेश प्रसाद साहू द्वारा बाल किशन साहू, तेलीबांधा, रायपुर, २० वर्ष, हंसी मजाक करना।

सालनदास हिरानी, मुकादम गंज, जबलपुर (म. प्र.) १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना।

राजेश कुमार शर्मा, ... बाजार के पास, ... चित्रकला।

निर्दोष कुमार गुप्ता १/१०५९८ मोहनपार्क, नवीन शहदरा, दिल्ली-३२, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

नरेश कुमार, प्री मेडीकल, ३, अहीर कलेज, रेवाड़ी, १७ वर्ष, सिनेमा हाल में गलत सीटों पर बैठना।

बल्देव राज बजाज, काशीपुर (नैनीताल) २४४७१३; १७ वर्ष, पत्र-मित्रता।

विजय कुमार लालवानी ७/१६७(८) सिन्धीबाड़ा, छोतापारा, रायपुर, (म. प्र.) २० वर्ष,

मुरलीधर उदासी, २ विश्राम-तेलीबांधा रायपूर (म.प्र.) २० वर्ष, पढ़ना।

मुकेश कुमार जैन 'पारस' १९, अबुल फजल रोड, बंगाली मार्केट, नई दिल्ली-१, २१ वर्ष,

रामबली मेहता, वि. सिवनी मालवा, २१ वर्ष, रेडियो सु...

राजेश अरोड़ा, m-60 श्री निवास पुरी, नई दिल्ली-६५, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता।

नवीन के. सिन्ध म. भगवानदास जे. पी चौक, दरभंगा, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

राजेन्द्रपाल-अरोरा, राम राज्य इण्ड-स्ट्रीज, गोबिन्द रोड, रुद्रपुर १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना।

कृपाल सिंह छोकर म.न. १४६८/३, आजाद नगर, लुधियाना-३, पंजाब, १९ वर्ष, पत्र-मित्रता।

राजू, रुद्रपुर कृषी भण्डार, भगतसिंह चौक, रुद्रपुर, १६ वर्ष, बैडमिन्टन शतरंज खेलना।

सुनील सच्चर यू. पी. हैण्डलूमस्टोर ६१/१५ विद्यार्थी मार्केट, कानपुर. १८ वर्ष, पैसा कमाना।

प्रवीन संभ्रवाल, ११७... देहरादून (उ. प्र.), २... मित्रता।

राकेश कुमार सचदेवा, १३/७२, गीता कालोनी, दिल्ली-३१, २० वर्ष, लोगों से मित्रता करना, सेवा करना।

संजय अग्रवाल, २७ अशोक नगर, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

मो. नौशाद मु. जलालपुर, जान समाज मेडिकल बिहार शरीफ, नालन्दा हाल, १० वर्ष जूडो-कराटे सीखना

विनोद कुमार, नुरपता गांव झड़ग तै० जुब्बल जिला. शिमला (हि. प्र.) १८ वर्ष।

सुरेश कुमार खुराना, सब्जी मंडी, जींद (हरियाणा) २० वर्ष, फरमाईश, क्रिकेट।

राजेन्द्र भाटिया २क-७ हिरणभगरी से. १३, उदयपुर (राज.) 313001 15 वर्ष, कहानी लिखना।

जयन्त खाँ सिन्हा (चू... श्वरी शरण सिन्हा कु... डालटनगंज, बिहार, ...

मुकेश कुमार ब्यौहार, रेंज आफिस कोतमा शहडोल (म. प्र.) १९ वर्ष, बगवानी, दीवाना पढ़ना।

सुभाष चन्दरा मित्तल अमृत वाईस एण्ड जनरल मिल्स, बाघा पुराना (पंजाब) १९ वर्ष, नावल पढ़ना,

देवन्द्र कुमार भन्साली, रांगड़ी चौक, बीकानेर-३३४००१; १९ वर्ष, पत्र-मित्रता।

देवेश नन्दन, द्वारा श्री ब्रह्मचारी उमा कान्त शर्मा, ५A, नूरानी बाग कालोनी, १६ वर्ष,

प्रकाश चन्द्र नेना 'नू' इरीगेशन कालोनी करही, पं. निमाड़ (म. प्र.) ४५१२२०; २१ वर्ष।

नरेन्द्र कुमार महावीर भंडार लाड़पुरा, बाजार कोटा (राज.) १८ वर्ष, पत्र-मित्रता।

मन्नू कपूरिया १२३ ... टाउन, करनाल, १६ व... पढ़ना, पत्र मित्रता।

अरुण कु. बंसल, बंसल भवन मानटोल विराटनगर (नेपाल), १२ वर्ष, टिकट संग्रह।

रवि नागपाल द्वारा शंकर ब्रदर्स अटल सेवाराम मार्केट कोटा १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

दुधराज एस. संघवी १८८ मिन्ट रोड मद्रास-३ १५ वर्ष, जूडो और दीवाना पढ़ना।

रामनरेश सिंह तोमर, ६आनन्द गंज झिरी, उज्जैन-४५६००१, १८ वर्ष, पहलवानी करना।

सुखराम सिंह तोमर ६. आनन्द गंज झिरी, उज्जैन-४५६००१; २२ वर्ष, रेडियो सुनना।

हमारा पताः दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी,
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम -----------------------------

पता -----------------------------

आयु ------------- शौक -------------

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

ोली के नये रंग

की वैज्ञानिक युग की होली की एक दीवानी कल्पना

R.N. 10598/65 Regd. No. D(DN)-275